एक प्रति १० रुपए * वार्षिक १०० रुपए

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

मार्च २००६ * वर्ष ५६ * अंक ३

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का दसवाँ अधिवेशन भुवनेश्वर में ता: २६ मार्च २००६

नव निर्वाचित अध्यक्ष

श्री सुरेन्द्र कुमार डालमिया

नव निर्वाचित महामंत्री

श्री शिव कुमार अग्रवाल

अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष

श्री ओमप्रकाश लाठ

भगवान जगन्नाथ का पावन तीर्थस्थल पुरी की यात्रा सुविधापूर्ण

भुवनेश्वर से सड़कमार्ग द्वारा मात्र सवा घंटा की यात्रा ।

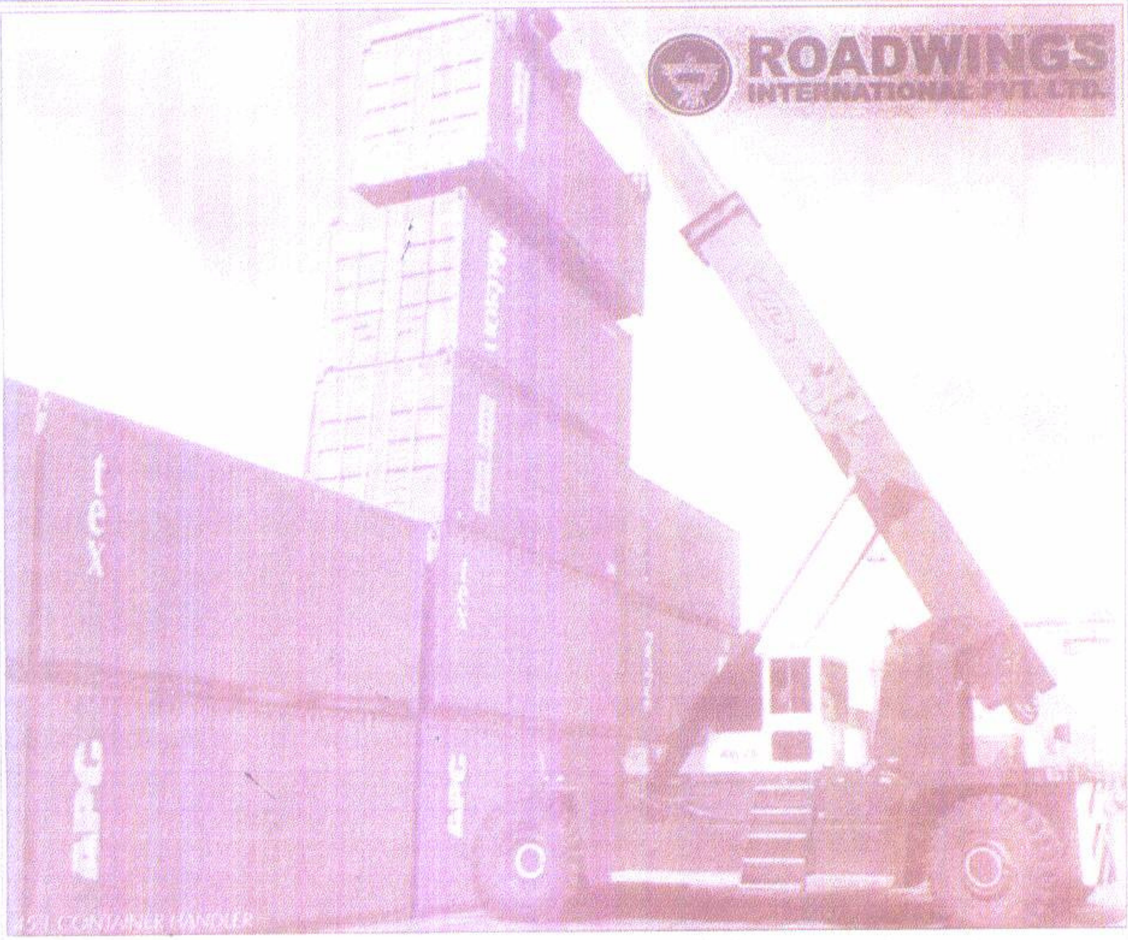

Equipped with Modern Container Handling Equipments

Head Office :

8, Camac Street, Kolkata - 700 017
Phone : 2282-5784/5849, Fax : 033-2282-8760
E-mail : roadwingsinternational@gmail.com

Zonal Office :

"Nirma Plaza", Moral, Makwana Road
Andheri (E), Mumbai 400 059
Phone : 2850 7928, Fax : 022-2850 7899
E-mail : roadwings@vsnl.com

इस अंक में

अनुक्रमणिका-	३
जनवाणी एवं नव समवत् की शुभकामनाएं-	४
सम्पादकीय-	५-६
अध्यक्ष की कलम से/श्री मोहनलाल तुलस्यान-	७
फिजूल खर्ची पर अंकुश लगाएं/श्री भानीराम सुरेका-	९
सामाजिक का गिरता ग्राफ/श्री जगदीश प्रसाद तुल्सयान-	१०
कविता- जीवन का मर्म/श्री संदीप जैन-	१०
बिखरे अम्बानी प्रकरण/ श्री राजेन्द्र शंकर भट्ट-	११-१२
विचार क्रांति की प्रेरक शक्ति/स्व. विजय सिंह नाहर-	१२
तन परदेशी मन देशी/डा. मनोहर लाल गोयल-	१३-१४
धरोहर/श्री शिवचरण मंत्री-	१४
बंद दरवाजौ/श्री योगेश पांड्या-	१५-१६-१७
कविता 'चुंदर'/डा. बस्तीलाल सोलंकी-	१७
मीरा के राम (साभार)-	१८
वेलेंटाइन डे बनाम प्रेम/श्रीमती कोमल अग्रवाल-	१९
स्वस्थ जीवन शैली अपना संभव है/श्री रामनिवास लखोटिया-	२१-२२
आई असवंती गणगौर/श्रीमती मंजुरानी गुटगुटिया-	२३
विविध कविताएं-	२४

युग पथ चरण

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन सहित बिहार, पश्चिम बंगाल, पूर्वोत्तर आदि प्रादेशिक सम्मेलनों एवं अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के कार्यक्रमों की रिपोर्टें। २५-२६

समाज विकास

मार्च, २००६

वर्ष ५६, अंक ३

एक प्रति- १० रु.

वार्षिक- १०० रु.

समाज विकास

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
२. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
३. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
४. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
५. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
६. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
७. भारत के कोन-कोने में फैले हुए ९ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
८. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु।

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२-बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता-७, फोन : २२६८-०३११ के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इलस्ट्रेटेड इंडिया प्रेस, ७४, लेनिन सरणी, कोलकाता-७०००१३ में मुद्रित।
संपादक : नंदकिशोर जालान

जनवाणी

इस स्तंभ के अंतर्गत सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषयों पर पाठकों के मतों का स्वागत है। साथ ही समाज के आंतरिक एवं गहन विषयों तथा समाज विकास में प्रकाशित सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव भी आमंत्रित हैं।

-सम्पादक

समाज विकास जनवरी अंक प्राप्त हुआ। यह सामाजिक दृष्टिकोण से परिपूर्ण एक भाव परक गुलदस्ता है। इसमें सर्वत्र समाज विकास, सुधार तथा नवबोध का प्रकाश प्रस्फुटित है। रचनाओं की रमणियता में सामाजिक चिन्तन और आत्मज्ञान इसके विशेष लेख हैं। सभी रचनाएं अपनी-अपनी विशेषताओं से अभिमंडित हैं। इसके सम्पादन कौशल की गूंज ध्वनित हो रही है। रचना संसार का अनुपम पुष्प है यह अंक।

-डा. उदय वीर शर्मा
सम्पादक- वरदा
बिसाई (राजस्थान)

समाज विकास पत्रिका के माध्यम से बहुत कुछ जानकारी और ज्ञान प्राप्त हो रहा है। हम इसी प्रकार घर बैठे-बैठे पत्रिका के माध्यम से बहुत कुछ प्राप्त करते रहे और प्रेम भाव बना रहे।

-अशोक कुमार अग्रवाल
खेतराजपुर, उड़ीसा

फरवरी अंक प्राप्त हुआ। अध्यक्ष की कलम से एवं भानीराम सुरेका द्वारा बड़े ही महत्वपूर्ण एवं सामाजिक विषमताओं का सही रूप समाज के सम्मुख रखा गया है। सामाजिक विवेचन 'समाज विकास' द्वारा समय-समय पर होते रहने से आने वाले समय में वह दिन दूर नहीं कि हमारी सामाजिक चेतना निश्चित रूप में आयेगी। हम आपसी भेदभाव को मिटाकर फिर से सम्मेलन के झंडे के नीचे एक होकर संसार के सम्मुख अपनी छाप रखने में अग्रसर होंगे।

-सत्यनारायण तुलस्यान
मुजफ्फरपुर

विक्रमी नव सम्वत् २०६३ के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

नया साल मंगलमय हो

मित्रों की सद्भावना हो
मन में ऊँची कामना हो
घर आंगन मधुमय हो
नया साल मंगलमय हो

पूरी सब आशाएं
दूर हटें सब बाधाएं
जीवन सबका सुखमय हो
नया साल मंगलमय हो

अध्यक्ष
मोहन लाल तुलस्यान
चैत्र शुक्ल एकम्

महामंत्री
भानीराम सुरेका
३० मार्च २००६

अमृत घट

जो क्रोध नहीं करता, वह क्रोध करने वाले से श्रेष्ठ है। जो सहनशील है, वह उससे बढ़कर है, जो सहन नहीं करता। जो मानवेतर है, उन सबकी तुलना में मनुष्य प्रधान है। जो विद्वान है, वह न जानने वालों में प्रधान होता है। यदि कोई अपने से जली-कटी बातें कहे, तो वैसा न कहना चाहिये। जो उन बातों को सह लेता है, उसका तेज दुर्वचन कहने वालों को फूंक डालता है और उसके सब पुण्यों को हर लेता है। मनुष्य को चाहिए कि किसी का मर्म न दुखाये। किसी से कठोर बात न कहे। जो वचन दूसरे को उद्वेग पहुंचानेवाला और हृदय छीलनेवाला है और नारकी है, उसे कभी न कहे। जिसकी वाणी रूखी और मर्मान्तक है, जिसके शब्द शूल की तरह दूसरों को चूमते हैं, ऐसे मनुष्य के मुख में साक्षात् नाश की देवी निऋृति रहती है। ऐसे पुरुष को नितान्त श्रीहीन समझना चाहिये। वचन रूपी वाण दुर्जन के मुख से छूटते रहे हैं, जिनसे मारा हुआ दूसरा व्यक्ति रातदिन छटपटाता है। जो वाण दूसरे के मर्म को छेद देते हैं, उन वचन रूपी वाणों को बुद्धिमान व्यक्ति दूसरों पर नहीं चलाते।

तीनों लोगों में इस प्रकार का कोई वशीकरण नहीं है, जिस प्रकार मीठी बोली, दान और प्राणियों के साथ मैत्री भाव है। इसलिए सदा मीठी बात कहो, कड़ी नहीं। जो पूजा योग्य है, उन्हें सम्मान दो।

मनुष्य मानवैतर प्राणियों से श्रेष्ठ है- देव, गन्धर्व किन्नर, सिद्ध आदि सब मानव से घटकर है। क्योंकि मनुष्य के पास दस अंगुलियों वाले दैव के दिये हुए दो हाथ हैं। मानव से श्रेष्ठ यहां और कुछ नहीं है।

-वेदव्यास, महाभारत आदि पर्व
अध्याय ७०/८८

सम्पादकीय

समाज विकास : गत-आगत

नन्द किशोर जालान

अड़तालिस वर्षों से कुछ अधिक ही हुए १ जुलाई १९५८ से 'समाज विकास' की प्रशंसा के साथ आलोचन, अपनापन के साथ परायापन, रूचि के साथ अखरन लिए चलती चक्की की तरह चलता व गल्ले के लिए यदा-कदा रूकता, लगभग ६००० परिवारों के पास याने ५०००० से अधिक हाथों में पहुंचने लगा है।

इसके जिस रूप ने आपको लुभाया उसके लिए हमें संतोष करना ही पड़ेगा। लेकिन जिस रूप ने आपको थकाया उसके लिए हमें कोई मलाल नहीं।

प्रगति के पंखों पर चढ़ा, आचार-विचार व व्यवस्था की क्रान्तियों के बीच पला विगत शताब्दी का मारवाड़ी युवक जो वृद्ध होता जा रहा है और बालक जो युवा हो आया है, उसके अनुकूल सामग्री संजोना सहज तो नहीं ही है। नित नये आलोक-विलोक व प्रकाश कणों के बीच से गुजरता उसका मानस चेतना व विकास के रंगों की जिज्ञासा से भरा पड़ा है। फिर भी उसकी पसन्द व नापसन्द को छूने का छोटा-मोटा प्रयत्न रहा है। जड़ साधनों से दूर रह कर इच्छा व अनिक्षा से बढ़ाये हुए आपके हाथ का सहारा लिये हम सम्मेलन के इस प्रकाशन में पुरानी मान्यताओं के बदले कुछ नयेपन का आकलन प्रस्तुत करते रहे हैं।

समाज की समस्याएं देश की समस्याओं से भिन्न नहीं है। फिर भी व्यक्ति को उनका जिक्र उस समय अधिक प्रिय हो जाता है जब वे उसके अपने समाज के दायरे में विचारणीय हो आती है या उनके साथ उसके समाज का शब्द जोड़ दिया जाता है। वस्तुतः इसी से इसके अंकों में आप मारवाड़ी समाज का सीधा सम्बोधन पाते रहे हैं और पायेंगे।

समस्या व समाधान, प्रसंग व प्रस्तावना, कल्पना व विल्पना, संदेश या अध्यादेश, सहयोग या असहयोग, उपयोग या अनुपयोग आदि आदि कितना ही इसके साथ जुड़ा है। इनको उभारने या सन्तुलित करने, प्रेरणा देने या अत्यधिक उत्कंठा का निवारण करने, आदि मांगों का संदेशवाहक इसमें जरा-सा सहारा लगाने का प्रयत्न करेगा, करता रहा है।

विगत १५ अगस्त १९४७ को देश स्वतंत्र हुए लगभग साठ वर्ष होने को आये हैं। हमने समाज की समस्याओं का इन पृष्ठों में सीधे विचार किया है। यह क्रम चालू रहेगा और आज का विषय है समाज की मनोवृत्तियां और भावनाएं। आये दिन यह बात घर करती जा रही है कि मारवाड़ी समाज को अपने विकास के लिए मनोवृत्तियों और भावनाओं के संस्कार को प्राथमिकता देनी होगी। मानव के अन्तस का निर्माण उसका बाहरी निर्माण होता है, इसमें मतभेद नहीं। लेकिन विचारों का पार्थक्य तो वहां आता है जहां उस अन्तस के निर्माण के रूप का चित्रांकन किया जाता है, यानी हम उन चित्रों में रमें जो काफी वर्ष पुराने हैं या नये चित्रों के रस से अपने को ओतप्रोत करें।

भावनाओं की बात करते हुए यह मानना पड़ेगा कि सत्तर वर्ष पहले जैसी वे चिटकने वाली बात नहीं रही। आन्दोलनों के बाद आन्दोलनों ने उन्हें इतना सुधार दिया कि वे परिष्कृत होती आज अटूट शीशे के सदृश्य हो गई हैं। देश के लिए उनमें एकात्म-भाव है, भाषा के लिए उनमें समदृष्टि है, कर्म के नाम पर अपने-अपने क्षेत्रों में जी-तोड़ परिश्रम है और अनुदान उनका चारों ओर खुला है। किसी के साथ कहीं भी बैठने, खाने-पीने या भ्रमण करने में उनकी भावना को कोई ठेस नहीं पहुंचती। आप इशारा करना चाहेंगे उस बड़े तबके की ओर जो गांवों में या शहर के कुछ खास टुकड़ों में है। किन्तु हम उसकी बात पर अपना निष्कर्ष निकालें ही क्यों? अपवाद तो होते ही हैं। फिर भी वे आज हमसे अछूते कहां, बल्कि इसी ओर तो बढ़ते चले आ रहे हैं।

गड़बड़ी उपजती है जब हम मनोवृत्तियों की बात करते हैं। स्वार्थजन्य मनोवृत्तियां पथ के आड़े आ जाती हैं। सूची बनायें तो शायद लम्बी हो जाएगी, छोड़िए उसे। आइये हम केवल दो-एक बातों पर ही विचार करें।

क्या आप यह नहीं मानते कि मारवाड़ी समाज में स्त्रियों से पुरुष अधिक हैं? मैं तो ऐसा मानता हूं कि समाज में पुरुषों के अनुपात में १००० पीछे ८७५ से भी कम स्त्रियां हैं। आज जब एक पुरुष एक स्त्री से ही विवाह कर सकता है तब भी कहीं हजार-दो हजार ऐसी लड़कियों का पाना दूभर है जो आजन्म कुंआरी ही बैठी रह गई हो। बात बड़ी सीधी है कि यह दोष समाज की मनोवृत्ति का

है कि वह भारी-भरकम दहेज का थाल अपने आगे आगे लिये चलता है और लड़कियों की कमी के बावजूद भी लड़कियों को इस योग्य नहीं बनाता कि वे दहेज मांगने वाले का धत्ता बता सकें। थोड़े दिनों पहले कई मजेदार दृष्टांत सामने आये थे। लड़की सुशील, सुन्दर व पढ़ी-लिखी थी। उन्हें एक घर रूचा। लड़की के साथ उन्होंदे दहेज की थाली आगे दिखाई। मांग अधिक सामने आई और बात आगे नहीं बढ़ी। जहां लाखों वालों की यह हालत है, वहाँ कुछ हजारों वालों की तो बिसात ही कैसी। दूसरी ओर लड़की वाले लड़के की जगह उसका घर-बार देखते रहे तो तीसरी जगह राजस्थान, पंजाब के कुछ इलाकों में दहेज लड़के वालों को देना पड़ रहा है। दहेज को रात-दिन कोसने की हमारी सारी प्रेरणा, उत्साह और स्फूर्ति निजी घर में काम पड़ते ही काल्पनिक मान-मर्यादाओं और स्वार्थजगन्य गढ़े-गढ़ाये धर्म के लेबुल लगे नियम-कायदों की आड़ में हवा हो जाती है। बड़े मीठे रूप से व्यक्ति अपने दहेज विरोधी रूप को कड़वे विष को घोलकर पी कर भूल जाता है। अब आप ही बताइये सिवाय हमारी मनोवृत्तियों के दोष कहां?

यदि आपको उपर्युक्त बात पुरानी लगती हो तो आइये बिल्कुल आधुनिक प्रश्न पर विचार करें-

वैसे तो कहा जाता है कि समाज ने विधवा विवाह को स्वीकार कर लिया। लेकिन वास्तविकता इससे बहुत दूर है। यदि इतने बड़े देश में मारवाड़ी समाज में वर्ष में इक्के-दुक्के विधवा-विवाह हो जायें तो क्या यह समस्या का और उससे उत्पन्न कमजोरियों और गलतियों का हल हो गया या समाज ने इसे सर्वमान्य बना लिया? जहां तक ऐसे व्यक्ति को जिसकी स्त्री का देहान्त हो गया है नई शादी के लिए कुंआरी लड़की (प्रेम हो जाने की बात को छोड़कर) मिलती रहेगी, वहां तक न तो इस समस्या का कोई समाधान ही है और न इसे समाज द्वारा पूर्णतः अपनाया गया हो कहा जा सकता है। रूढ़ीवादी कहे जाने वाले सज्जन आज ऐसे विवाहों के आशीर्वाद समारोह में भले ही चले जाते हों, लेकिन उनका मानस इसके लिए तैयार नहीं। इनसे भी बड़ा और महत्वपूर्ण प्रश्न उनका है जो निर्माण का नारा लगाते हैं। अपने नये खून की दुहाई देते हैं। नये खून की चेतना और दर्शनप्रियता में किसी प्रकार की शंका नहीं, केवल उनकी मानसिक शक्ति की थोड़ी-सी निर्बलता ही आड़े आती है। आदर्श की बात के साथ यदि आदर्श अपनाया न जाये तो वह आदर्श थोथा हो गिर पड़ता है। हो सकता है कि किसी दिन बल्कि कुछ वर्षों बाद ही वह स्थिति आ जाये जब समाज-व्यवस्था में स्त्री-पुरुष का प्रेम ही सर्वोपरि हो।

समाज विकास ने अपनी एक परम्परा निभाई है। उसने आपके बौद्धिक स्तर को छूने मात्र का प्रयास किया है। घिसी-पिटी लकीर से थोड़ा विलग रह कर भी आपके मानस के नवीन से नवीनतम आलोक-विलोकों को पहुंच पाना इसके सीमित व छोटे से दायरे में कहां संभव था? यह प्रयास ता आप सबों का था। हमें तो फिर यही दोहराना है कि इसके जिस रूप ने आपको लुभाया या हमें बताया वे स्वागत योग्य रहा है और रहेगा।

सदस्यों के ध्यानार्थ

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा प्रकाशित इसकी सदस्य डायरेक्टरी निम्नानुसार भेजी जा चुकी है। स्थानीय आजीवन एवं साधारण विशिष्ट सदस्य निम्न पते से डायरेक्टरी प्राप्त कर सकते हैं:

आन्ध्र प्रदेश : प्रान्तीय अध्यक्ष श्री रमेश कुमार बंग, हैदराबाद फोन (०४०) २४७५-३४३४/३४८३, मोबाईल : ०९८४८०८२७६५

उत्कल : प्रान्तीय अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार डालमिया, भुवनेश्वर, फोन : (०६७४) २५४५०९९/६०९९, मोबाईल : ०९४३७००६००९

बलांगीर : शाखाध्यक्ष श्री गौरीशंकर अग्रवाल, नादरमल गोपीराम एबीएसएस रोड, बलांगीर-७६७००१ फोन : ०६६५२/२३०७२०

पूर्वोत्तर : प्रान्तीय अध्यक्ष श्री विजय कुमार मंगलूनिया, नौगांव, फोन : (०३६७२) २२२०३८, मोबाईल : ०९४३५०६१५०१

श्री बजरंगलाल नाहटा, टी.पी. रोड, हैवर गाँव, नगाँव, दूरभाष (०३६७२) २२५२७८

श्री ओम प्रकाश खंडेलवाल, पूर्वांचल रोलिंग मिल्स, जी एस रोड, दिसपुर, गुवाहाटी-७८१००५, मोबाईल : ९४३५०४५४२५

बिहार : प्रान्तीय अध्यक्ष श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला, पटना, फोन : (०६१२) २२७५३९१ मोबाईल : ०९३३४३३२१३३

महाराष्ट्र : श्री श्रवण कुमार सुरेका, मुम्बई।

आजीवन सदस्यों से निवेदन है कि जिनका नाम इस डायरेक्टरी में प्रकाशित नहीं हुआ है वह अपना नाम पता, फोन, फैक्स, मोबाईल, ई-मेल आदि का उल्लेख करते हुए तत्काल सम्मेलन कार्यालय को सूचित करें।

अन्य सभी सदस्यों से निवेदन है कि वे आवेदन पत्र देकर सम्मेलन कार्यालय से डायरेक्टरी प्राप्त कर सकते हैं। अन्तर्देशीय सदस्यों से उनकी अनुमति मिलने पर उन्हें वीपीपी से डायरेक्टरी भेजने की व्यवस्था की जा सकती है।

-भानीराम सुरेका, महामंत्री

अध्यक्ष की कलम से

दिल नहीं मिला सकता तो हाथ भी न मिला

मोहनलाल तुलस्यान

अभी-अभी होली का त्यौहार बीता है। रंग-रस वर्षा से सराबोर हुए लोगों के दिलोंदिमाग से होली की खुमारी धीरे-धीरे छंट रही है। अगली होली के इंतजार में लोग दिन गिनने लगे हैं। मुझे पूरा यकीन है कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सभी पदाधिकारियों, सदस्यों और साथ ही मारवाड़ी समाज के हमारे सभी बंधुओं, जो देश-विदेश में फैले हुए हैं, ने होली भरपूर खेली होगी और रंग-रस वर्षा से सराबोर होकर बुराई पर अच्छाई की जीत का जश्न मनाया होगा।

हमारे देश और समाज में पर्व का आना हमेशा से मन को तरंगित करने वाला रहा है फिर होली का तो कहना ही क्या? यह तो है ही रंग, चंग, भंग की मस्ती का त्यौहार। बसंत का आगमन हुआ नहीं कि मन में गुदगुदी होने लगती है। पतझड़ के प्रकोप से श्रीहीन हुई धरती की कोख हरियाली के सुनहरे आवरण से भर जाती है। फूलों की मधुर सुबास मन में कल्पना की नई पौध को जन्म देता है। मन की मधुर कल्पनाएं गीतों के रूप में फूट पड़ती हैं-

टूटेंगे प्रतिबंध हजारों
फागुन आने दो
देखेंगे हम भी कचनारों
फागुन आने दो
गदरायेगी नीम
आम बौरायेगा
रस बरसेगा महुवा
गांव नहायेगा
तुम भी डूबोगे कचनारों
फागुन आने दो।

सदियों से होली हमारे लिए विशेष महत्व का त्यौहार रहा है। काम-काज की उलझन से थके मन को सरस, सतेज, सतरंगा करने के लिए भी होली उपयुक्त त्यौहार है जब शीत ऋतु की ठंडक से शिथिल मन बसंत की उष्मा से एकाएक गतिशील बन जाता है। पुरवैया का झोंका तन-मन को झकझोरता है।

रंगों के इस त्यौहार पर रसिक मन गीतों, कविताओं में खो जाता है। इस मौके पर दर्जनों हास्य कवि सम्मेलन और गीतों के आयोजन इसके प्रमाण हैं। हालांकि एक समय इन गीतों-कविताओं में हास्य के पुट के साथ जो गंभीर संदेश छुपा होता था वह अब नहीं है बल्कि हास्यास्पद तरीके से श्रोताओं को हंसाना ही कविता का धर्म बन गया है।

मैंने जीवन में बहुतेरे कवि-सम्मेलन और हास्य कवि-सम्मेलन देखे हैं। कवियों को देखा-सुना है पर आज के कवि पता नहीं क्यों मन पर अपनी छाप नहीं छोड़ पाते। वस्तुतः साहित्य-साधना में तल्लीन न होकर शार्टकट तरीके से साहित्यकार कहलाने की अभिलाषा ही इसके मूल में है जबकि मेरा मानना है कि हमारे कवियों-साहित्यकारों को आज के पॉप-कल्चर के दौर में कहीं अधिक गंभीर साहित्य सृजन करके लोगों को अपनी परंपरा, संस्कृति से जोड़ने का प्रयास करना चाहिये।

हमारे समाज की नई पीढ़ी जिस विकृत संस्कृति की चपेट में है उससे छुटकारा दिलाने के लिए इस तरह के प्रयास की सख्त जरूरत है।

होली का जो संदेश है उस पर अमल करने की भी जरूरत है क्योंकि सिर्फ रस्म के तौर पर रंग खेलना और दिखावे के लिए दोस्ती करना होली के महान उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर सकते।

आजकल पर्व को भी लोग औपचारिकता के तौर पर मनाते हैं जबकि होना यह चाहिए कि कम से कम पर्व के अवसर पर हम अनौपचारिक होकर सबसे मिलें। खुलकर दिल की भावनाओं का आदान-प्रदान करें एवं एक उन्मुक्त, विराट समाज की स्थापना का प्रयास करें।

जब हम निःस्वार्थ भाव से, उन्मुक्त मन से लोगों से मिलेंगे तो यह निश्चित है कि एक दूसरे को समझने की प्रवृत्ति का विकास होगा और हम अपने भीतर एक नई ताजगी का अहसास कर पाएंगे। अंत में बशीर बद्र के इस शेर से अपनी बात खत्म करना चाहूंगा कि-

मुहब्बतों में दिखावे की दोस्ती न निभा
गर दिल नहीं मिला सकता तो हाथ भी न मिला।

WITH THE BEST COMPLIMENTS FROM :

A

WELL

WISHER

फिजुलखर्ची पर अंकुश लगायें

भानीराम सुरेका, राष्ट्रीय महामंत्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

प्रसंग-१

कई साल पहले संभवत: १९८० में मेरे भतीजे की शादी ५, न्यू रोड, कलकत्ता में थी। उस समय मैं पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन में पदाधिकारी था। शादी के मौके पर खाने-पीने के अन्य सामानों के साथ लड़कीवालों द्वारा बादाम बर्फी भी बनवाई थी जबकि सम्मेलन द्वारा उस पर रोक लगाया गया था। जब मुझे इस बात का पता चला तो परिवारवालों के लाख दबाव डालने के बाद भी बर्फी को सजनगोठ में परोसना बंद करवा दिया। यह वह समय था जब सम्मेलन की खिलाफत करने की हिम्मत हममें नहीं थी।

प्रसंग-२

लगभग उन्हीं दिनों कलकत्ता महानगर में एक शादी की चर्चा बड़ी जोरों पर थी। अलीपुर के अशोका रोड में आयोजित इस शादी में धन का प्रदर्शन ही असली आकर्षण था। शादी के मद्देनजर ७ दिनों में ७ पार्टियों का आयोजन होना था। शादी के मौके पर आयोजित गीत सम्मेलन में फिल्म अभिनेत्री वैजयंती माला को आमंत्रित किया गया था। जब हमें इस बात का पता चला तो कलकत्ता चेम्बर आफ कॉमर्स में अपने समाज के गणमान्य लोगों को लेकर एक सभा की और तय किया कि धन प्रदर्शन पर उतारू इस परिवार को समझाया जाय। हम लड़के के पिता से मिलने गये तो हमारी बातों से वे उबल पड़े। अपने धन के बोझ तले हमें दबाने की तरह-तरह की धमकी भी उन्होंने दे दी। कई बार अनुनय-विनय के बाद भी जब उनके सिर से धन का भूत नहीं उतरा और हमारे समक्ष प्रतिष्ठा का सवाल उठ खड़ा हुआ तो हमने दैनिक विश्वमित्र के तत्कालीन सम्पादक, प्रखर समाज चिंतक, सुधारवादी आन्दोलनों के प्रबल हितैषी श्री कृष्ण चन्द्र जी अग्रवाल से सारी बातें बताई। श्री अग्रवाल ने हमारा साथ देते हुए उक्त सज्जन पर दबाव डालना शुरू किया। तब कहीं जाकर उस धनकुबेर जी सादगी से शादी करने को राजी हुए।

इन दो घटनाओं का उल्लेख करने के पीछे मेरा उद्देश्य समाज की मानसिकता में आए परिवर्तन को रेखांकित करना है। धन का महत्व समाज में सदा से रहा है लेकिन धन के प्रदर्शन की मानसिकता पीछे बीस-पच्चीस वर्षों मे तेजी से बढ़ी है। यही वह समय है जब सामाजिक संस्थाओं का महत्व निरंतर कम हुआ है और लोग उच्छृंखलता की सामाजिकता के रूप में परिभाषित करते रहे हैं।

मेरा अपना अनुभव कहता है कि धन का उपार्जन करना वह भी सही तरीके से अच्छी बात है। यह परिवार, समाज और राष्ट्र की प्रगति के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, लेकिन अर्जित धन का अपव्यय गलत प्रवृत्ति का सूचक है। धन का सार्थक उपयोग जहां समाज, राष्ट्र को उन्नति की ओर ले जाता है वहीं धन का दुरुपयोग अवनति की ओर।

धन के अपव्यय की बढ़ती प्रवृत्ति के कारणों की खोज करते हुए मैंने पाया है कि यह उन लोगों में ज्यादा है जिन्होंने अपने परिश्रम, लगन और योजना से धन नहीं कमाया बल्कि येन-केन-प्रकारेण रातोंरात धनवान बन गये। चूंकि परिश्रम से उपार्जित धन की महत्ता का ज्ञान उन्हें नहीं था इसलिए उसके प्रति सम्मान का भाव भी वे नहीं समझ सके वरन उपार्जित धन की बदौलत समाज को मुट्ठी में करने का उपक्रम करने लगे। प्रारंभिक दौर में तो उन पर थोड़ा-बहुत सामाजिक दबाव भी था पर सामाजिक संस्थाओं के निस्तेज होते जाने से ऐसे लोगों को फलने-फूलने का मौका मिल गया। शनै:-शनै: अपनी जेबी सामाजिक संस्थाओं का गठन कर ये लोग ही मूल सामाजिक धारा में अधिष्ठित होने लगे।

आज धन के प्रदर्शन की जो मानसिकता है वह अभूतपूर्व है। त्रासदी तो यह है कि अब धन प्रदर्शन से इनकार करना अपनी भद्द पिटवाने का सबब बन गया है। आप धन प्रदर्शन नहीं कर सकते तो समाज में होने का आपको अधिकार नहीं है इस तरह की धारणा लोगों के दिलोंदिमाग में घर कर चुकी है। शादी के मौके पर ही नहीं अब तो जन्म दिन, विवाह वार्षिकी, विवाह की रजत जयंती-स्वर्ण जयंती के बहाने भी धन का प्रदर्शन होता है। घरेलू आयोजनों को भी सामाजिक सामूहिक आयोजन का रूप दिया जाता है। ऐसे में यह सवाल उठना लाजिमी है कि आखिर धन के इस अपव्यय का अंतिम परिणाम क्या होगा? धन के संचय को अविलम्ब बनाकर राष्ट्रीय क्षितिज में आर्थिक शक्ति का आदर्श बना समाज धन की फिजूलखर्ची करके अंतत: कब तक अपनी धाक बनाये रख सकेगा?

धन अर्जित करना मनुष्य का धर्म है, कर्तव्य है, साथ में जीवन में जिन भोगों की जरूरत है, उसे भी भोगना चाहिये, मनुष्य जीवन में सफलताओं को प्राप्त करें। मनोबल के साथ जो व्यक्ति आगे बढ़ता है, उसको बिना संकट के शुद्ध धन का अर्जन होता है। परिस्थिति उसके सामने झुकती है जिनके अन्दर मनोबल का विकास हो।

मुझे यह स्वीकार करने में कोई दुविधा नहीं कि समाज का एक हिस्सा आज भी धन उपार्जन में सबसे आगे है, कहने को विश्व का तीसरा धनी व्यक्ति मारवाड़ी है पर साथ ही समाज का बहुत बड़ा हिस्सा धन कमाने की होड़ में पिछड़ता जा रहा है। धन कमाने के साथ धन गंवाने की जो सामाजिक परिस्थितियां बनी है उसमें अब एक कठोर अंकुश की जरूरत है ताकि परिवार के हित में, समाज के हित तथा राष्ट्र के हित में धन के संचय की प्रवृत्ति बढ़े। धन का प्रदर्शन, फिजूलखर्ची बंद हो। यदि आप इस बात को मानते हैं तो तत्काल धन के प्रदर्शन का विरोध शुरू करें।

सामाजिकता का गिरता ग्राफ और सामाजिक उत्थान

-जगदीश प्रसाद तुलस्यान, मुजफ्फरपुर

अब कहां जायें हम, कहावत है "दूसरों से जीते लेकिन अपने से हारे' हालात कमोवेश कुछ ऐसी ही अपने समाज की होती जा रही है। असल समस्या तो घर के अन्दर से है। इस पर विचार करना होगा और इसका कुछ न कुछ निदान तो निकालना ही होगा। हमें अपने कर्मों के अनुसार ही फल मिलते हैं। फिर हम अपने कर्मों से जीवन में प्रतिकूल परिस्थितियां क्यों उत्पन्न करते हैं। यह एक विचारणीय प्रश्न है। यह संसार कर्मक्षेत्र है। और हमारा जीवन एक समय सीमा में बंधा हुआ है। हम चाहें तो अपना जीवन केवल शारीरिक सुख-सुविधाओं के संग्रह के निमित्त मानकर लोक व्यवहार करें या फिर अपनी आत्मा को परमात्मा का अंश एवं अजर अमर अनिवाशी मानकर जीवन के शाश्वत मूल्यों के प्रति समर्पित रहते हुए आचरण करें यह हमें अपने विवेक को तय करना है। स्वयं में जीना है या समाप्ति में जीना है। सामाजिकता त्याग चाहती है। हमारे कर्म ही हमें अमरता दिलाते हैं। आज हमारा समाज तीव्र गति से विघटन की ओर बढ़ रहा है। व्यक्ति और समाज मर्यादाओं और अनुशासन दोनों स्तरों पर हर तरह से कमजोर होता जा रहा है। कानून और नियम उल्लंघन सहज और स्वाभाविक बनता जा रहा है। अधिकांश परिवार के सदस्य अपने मुखिया के नियंत्रण में रहना अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता का हनन मान रहे हैं। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करना महज डिग्री और सर्टिफिकेट प्राप्त करने तक सीमित होता दिखाई पड़ रहा है। हर स्तर पर भ्रष्टाचार, अनाचार और अपराध में बढ़ोतरी हो रही है। अपनी प्राचीन संस्कृति की बात करना अपने ऊपर पिछड़े पन की मुहर लगाने जैसा है। वेश-भूषा, भाषा, धर्म, संस्कृति को पश्चिमी संस्कृति की चादर से न ढकने वालों को जहां हेय दृष्टि से समझा जाता है, वहीं अंग्रेजी और अंग्रेजीयत को प्रगति का प्रतीक समझा जा रहा है। आज इस पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है कि वे कौन से ऐसे तत्व हैं जो भारत में सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक अस्थिरता बढ़ाने में लगे हैं। यह बहुत बड़ा सवाल है कि भारत आज भी औपनिवेशिक मानसिकता से क्यों नहीं उबर पा रहा है। क्या दुनिया में सर्वोच्च शक्तिशाली बनने को अपना सपना कभी पूरा हो सकेगा। किसी का ध्यान इस बात पर नहीं जा रहा है कि देश आज अत्यन्त कठिन और संवेदनशील मोड़ पर आ खड़ा हुआ है। हम जिस प्रकार प्रशासन चाहते हैं जिस तरह का शिक्षा का स्वरूप चाहते हैं क्याआज वह उस तरह का है? एक समय था जब देश के समस्त नागरिक, जाति, धर्म, समुदाय, सम्प्रदाय, समाज मात्र भाषाओं की विभिन्नता और परम्पराओं की अनेकता में रहते हुए भी भारत माता की सन्तान के रूप में एकता के अखण्ड सूत्र में जुड़े रहते थे। शायद लोग भूल गये हैं कि वसुधैव कुटुम्बकम का नारा देने वाली वेद भूमि भारत ही है। वसुधैव कुटुम्बकम वेद की देन है। भारत के ऋषियों ने जो रास्ता दिखाया और जिन धरोहरों से इस देश की पहचान बनी वह कोई और नहीं हिन्दू धर्म, भारतीय वेद संस्कृति ही है। आर्थिक विचारों और मान्यताओं पर विचार करके हम साम्रकृनित के दूत बनकर भारत में हम अपनी गरिमा बनाये रख सकते हैं। अपने आप को बदलना होगा समाज की घीसी पीटी धारा को मोड़ना होगा और अपने लिए समाज के लिए कुछ करने के लिए आगे आना होगा तभी हमारे समाज की गिरती हुई साख हमें पुन: मिल पायेगी। जय हिन्द जय समाज।

जीवन का मर्म

दो दिनों की जिन्दगी फिर, अमावस की काली रात है।
इस जीवन में जो भी कर ले, तेरा पुण्य प्रताप है।

कल-कल करता बहता झरना, गिरि से निकला, सागर में मिल खतम हुआ।
ऐसा ही है मानव-जीवन, आज उठा कल पतन हुआ।
यह छोटा-सा जीवन ही मानव को मिली सौगात है,
इस जीवन में जो भी कर ले, तेरा पुण्य प्रताप है।

कू-कू करती काली कोयल, दिखती है काली, पर सुन्दर गीत सुनाती है।
खुले गगन में उड़ती है वह, मीठे बोल सुना सबको वह लुभाती है।
ऐसे ही सबको ललचाती, मानव की हर बात है।
इस जीवन में जो भी कर ले, तेरा पुण्य प्रताप है।

-संदीप जैन, वीरपुर

सन् १९६० से २००५ में भारत में नया सवा हजार करोड़ का औद्योगिक साम्राज्य स्थापित करने वाले

बिखरे अंबानी प्रकरण राष्ट्रीय संदर्भ में

राजेन्द्र शंकर भट्ट, जयपुर

शब्द क्या सभी आन्तरिक आवेगों का प्रतिबिम्बन कर पाते हैं ? क्या शब्दों का उपयोग आन्तरिक भावनाओं और स्पष्ट विचारों पर आवरण डालने के लिए होता है ? क्या शब्द में ही शक्ति है जो अन्य प्रकार की प्रतिस्पर्धाओं तथा प्रताड़नाओं में ऐसा सृजन कर लेते हैं जो शान्ति संतुलन श्रेष्ठता को प्रस्तुत करता है ? और भी विचार हैं जो विगत छः महिने पहले देश के प्रमुख अंग्रेजी दैनिक के उच्चतर मूल्यों, मानकों, मन्तव्यों को अभिव्यक्त करने वाले स्तम्भ में अनिल अम्बानी के आलेख को पढ़ते-पढ़ते मन में आये हैं। उन्होंने गीता से उद्धरण दिये हैं। गीता भारत के भीषणतम सशस्त्र संघर्ष के समय सृजित हुई थी। इन दिनों जो संघर्ष भारत के सबसे बड़े औद्योगिक घरानों में चल रहा था उसी के बीच अनिल अंबानी ने ऐसे तत्व तथा ज्ञान के विचार अभिव्यक्त किये हैं। अन्तर यह है कि गीता जो नहीं लड़ रहा था ऐसे तीसरे व्यक्ति की ओर से उपदेश है। अनिल ने जो लिखा वह उसकी ओर से आया है जो स्वयं संघर्ष में था !

वैसे भी जो अनिल अंबानी ने लिखा उसे देख कर आश्चर्य हुआ, अच्छा लगा, उनके प्रति श्रद्धा और विश्वास बढ़ा। व्यापार, व्यवसाय, वित्त और राजनीति में भी डूबा व्यक्ति कैसे भारतीय ज्ञान तथा चिन्तन से अपने को इतना अवगत रखता है, और उसे अभिव्यक्त करने का संतुलन ऐसे कुसमय में निभा पाता है कि उससे ऐसे उन्नत विचार प्रसूत तथा प्रस्तुत हो जाते हैं। अवश्य संघर्ष का अपना तेज तथा चमक होती है, परन्तु कितनों में यह मिलती है! अनिल अंबानी के संबंध में विचार उठते और श्रद्धा बढ़ती है, उनका उस समय का लिखा को पढ़कर। उसे पूरा पढ़े बिना उसकी उच्च, सात्विक एवं ज्ञानपूर्ण प्रस्तुति का आदर नहीं हो सकता, और उसे पूरा का पूरा यहां नहीं दिया जा सकता।

अनिल अंबानी ने पहला प्रश्न यह उठाया है कि क्या विज्ञान जो निम्न एवं निकृष्ट आचरण इस समय हो रहा है उसका उपचार कर सकता है ? उत्तर स्पष्ट ही नकारात्मक है, चूंकि अहंकार, लोभ और अभिमान का मूल नैतिकता के विपरीत विश्वासों में है। मानव मस्तिष्क ही समस्त अज्ञान का सृजक है, जो हमें सांसारिक तत्वों में ले जाता है। अज्ञान का आरंभ अपने और पराये में भेद तथा द्वंद्व से होता है। इसमें से मैं और तुम अलग अलग होते हैं। और आदमी अपनी अपनी अभिवृद्धि में अनुरक्त होता है, जो उसे लोभ-लालच, स्वार्थ-स्वामित्व में उलझा देता है। आदमी को यह नहीं भूलन चाहिये कि वह परमात्मा का अंग है, इस तरह सभी मनुष्यों में परस्पर अभिन्नता है। अहंकार की जगह समर्पण जब आता है, वह स्वतः त्याग का रूप ले लेता है। आदमी की समझ में आने लगा है कि स्वयं उसका कुछ नहीं है, तब वह जो उसे मिला है उसमें संतुष्ट रहने लगता है, लोभ और अभिलाषा से वह मुक्त हो जाता है। उसकी कोई कामना स्वयं उस तक सीमित नहीं रहती, वह समदृष्टि, औचित्य और न्याय में विश्वास करने लगता है। निष्काम कर्म के प्रति वह सचेष्ट हो जाता है, कर्म ही तुम्हारा धर्म है, परिणाम परमात्मा के हाथ है। अभिलाषा और आधिपत्य की कामनाएं उसकी तिरोहित हो जाती हैं। त्याग ही विजय है इसमें विश्वास एवं श्रद्धा जितना अपने प्रयत्न से आती है, उतनी ही परम्परा तथा संस्कार से। आप माता-पिता के प्रिय बिना उनकी मान्यताओं को अंगीकार किये हो सकते हैं, अथवा उनसे प्रेरणा लेकर अपना और अपने भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

इसमें जो आक्षेप है, वह अंबानी परिवार के संघर्ष के समय, और अब उसके परिणाम के बाद भी, बार बार मन में उठा है। जयपुर के एक ही बाजार के दो उदाहरण हैं, एक में विभाजन के बाद दोनों अधिक सशक्त तथा समृद्ध हुए हैं- यह आशा और प्रार्थना अंबानी विभाजन से लाभान्वित दोनों पक्षों के लिए की जानी चाहिये। दूसरे उदाहरण में एक पक्ष का परम्परागत व्यापार बंद हो गया, दूकान जो एक से दो हुई थीं, उनमें से एक पर ताला लग गया, और दोनों अंगों की मिलकर जो अपार प्रतिष्ठा थी उस पर ग्रहण लग गया। इस प्रकरण में भी अंबानी व्यावसायिक एकत्व टूटा है। प्रश्न यह बनता है कि जो अपना एका, स्वार्थ, प्रतिष्ठा एक नहीं रख सकते, वे कैसे देश के लिए इनकी प्राप्ति के वास्ते सहायक हो सकते हैं। इस समय देश की दुर्दशा ही यह है कि सब अपने-अपने स्वार्थों के लिए आपस में लड़ रहे हैं, देश के हितों का किसी को ध्यान नहीं है। अगर एक परिवार के दो अंग साथ-साथ नहीं चल सकते तो यह सारा देश एक साथ कैसे उठ और बढ़ सकता है।

हां, यह साधना-सी एकाग्रता आवश्यक है। राजनीति को भी श्रेष्ठतर व्यक्तियों की आवश्यकता है, और राजनीति की महत्वाकांक्षा से किसी को नहीं रोका जा सकता। परन्तु राजनीति में व्यापार और व्यापार में राजनीति नहीं चल सकती. इससे दोनों बिगड़ती हैं। इसीलिए तो व्यापारियों

की तरह राजनेता भी धनाढ्य होने में जुट गये हैं। धन अर्जन नहीं, धनाढ्य दोषपूर्ण होती है, और उसका जो घुन राजनीति में लगा है उससे व्यापार-उद्योग-व्यवसाय को अपने को बचाना होगा।

इतने पर भी जो अनिल अंबानी ने लिखा, उस पर उसी समाचार पत्र में अगले दिन संपादकीय स्तंभ में प्रकाशित मन्तव्य उचित नहीं लगा। उसके लेखक ने उपहास और उपदेश का उपयोग करके अनिल अंबानी तथा उनके आलेख का स्तर गिराने का यत्न किया है, जो अत्यन्त अनुचित है। अनिल अंबानी के आलेख में गीता की परम्परा है, जो संघर्ष का संदेश है, पलायन का प्रस्ताव नहीं। भावना को समझे बिना जब शब्दों से लड़ा जाता है तब अपने लिखे को अपने हाथों हत्या हो जाती है।

अनिल अंबानी का आलेख समृद्ध समूह के लिए यह प्रेरणा देता है कि भारत में अभिवृद्धि करनी है तो भारतीय ज्ञान का अभ्यास पूरा होना चाहिये। पुराणों और उपनिषदों से उद्धरण देकर अनिल अंबानी ने अपनी पारंगता प्रकट की है, और ऐसा विश्वास होता है कि इसके ज्ञान ने उन्हें पारिवारिक संघर्ष के समय संबल दिया है।

एक बात और कहने की है। समस्या और संघर्ष कैसा ही हो, हमें भारत के अतीत से आलोक प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिये, जो इतना अनुभव-सिद्ध है कि उसमें से उचित मार्गदर्शन अवश्य प्राप्त होगा। इसके लिए जो भारत में वेदों के समय से लिखा गया उसका ज्ञान आवश्यक है, जो निरर्थक नहीं जाता, इसे अनिल अंबानी ने बताया है। परन्तु इसमें भी विवेक चाहिए, चूंकि वेदों के बाद जो लिखा गया उस पर वेद-ज्ञाता बहुत आक्षेप करते हैं, उपनिषदों तथा पुराणों तक पर। उचित अनुचित, लाभ हानि का भेद जब व्यापारी अपनी गतिविधियों में निभा लेते हैं, जो पढ़कर वे प्रभावित होना चाहें, उसके बारे में ऐसे लाभ की पहचान उनके लिए कठिन नहीं होनी चाहिये। परन्तु गोता लगाये बिना कुछ नहीं मिल सकता।

विचार क्रान्ति की प्रेरक शक्ति : युवा-पीढ़ी

-स्व. विजय सिंह नाहर, कलकत्ता

(एक समय ऐसा आता है जब राष्ट्र में, समाज में क्रांति आती है। चाहे कोई सोचे या न सोचे, कोई आदेश दे या न दे। परिस्थितियां उथल-पुथल मचाती ही हैं। यह एक ऐतिहासिक सत्य है, विवर्त्तन है।)

पुराने लोगों से कुछ होने वाला नहीं है। नये जमाने की नई लड़ाइयां तो युवा-शक्ति से ही लड़ी जा सकती है। युवक आगे बढ़ें। आगे बढ़ाये गये। जनता का आशीर्वाद उन्हें प्राप्त हुआ। समाज को उपयोगी बनाने के लिए उनमें आस्था थी। उनका मार्ग व लक्ष्य बना- बेकारी की समस्या को समाधान देना, हर व्यक्ति को रोजगार दिलाना, जनता की गरीबी दूर करना, शिक्षा पद्धति में आवश्यकतानुसार हेर-फेर करना, धनिकों द्वारा होने वाले शोषण को खत्म करना। इस युवा-शक्ति को सत्ता की ताकत मिली। काम शुरू हुआ। लेकिन बहुत सीधी-सी बात है- हर काम का अपना एक तरीका होता है। यह तरीका न जानने से उनका रास्ता भी गलत हो गया। व्यक्तिगत स्वार्थ आगे आ गया। चारों ओर घुसखोरी की धूम मची, चन्दे की चकाचौंध में जनता हतप्रभ हो गयी। चारित्रिक भ्रष्टाचार के आरोप से भी युवा नहीं बचा। आदर्श पतित हुआ, आदर्श योनी समाज के शाश्वत मूल्य, जो सदा से समय सापेक्ष रहे हैं, वे ही अनुभवहीनता की वजह विकृत होने लगे और जन-मन में ऊब पैदा हो गयी।

> ***क्रांति का चक्र चल रहा है। यह काल चक्र है। नया नेतृत्व सुपथ देगा, समाज श्रद्धा और प्रेम का होगा। युवा पीढ़ी विचार क्रांति को जीवन-क्रांति में बदलेगी।***

ऊब निराशा, हताशा की भावना की प्रतीक होती है। युवा-जन की आस्था टूटी। न रोजगार मिला न घुसखोरी मिटी, हर क्षेत्र में बड़े लोग और भी बन गये। गरीब और भी गरीब हो गये। भ्रष्टाचार और भी बढ़ गया। लाचार महिलाओं एवं छोटे-छोटे बच्चों से रेलगाड़ियों में चावल आरपार भेजने का कारबार लंबे समय तक चलता रहा और चल रहा है। यह एक छोटी सी मिसाल है जिससे लगता है कि गरीब की गरीबी दूर करने के बदले उन्हें अपराधी बनाया गया। रहने के घर का स्थान और करने का काम उचित न हो तो परिवेश में दुर्गन्ध बढ़ेगी ही।

क्रान्ति का अपना एक लक्ष्य होता है और लक्ष्य भ्रष्ट क्रांति से आज की सामाजिक विकृतियों ही उपलब्ध होंगी। इसी लक्ष्यहीनता का परिणाम हुआ प्रतिकारहीनता। शिक्षा की ही बात लें तो वहां भी दो-दो, तीन-तीन सालों तक परीक्षा परिणाम नहीं निकला। युवा पीढ़ी की आस्थाएं ढलती रहीं। शिक्षालयों में भी घुसखोरी प्रवेश कर गयी। शोषण का चक्र तेजी से चला। श्रमिक नेता श्रमिकों के शोषण में रत हुए, नेतागिरी के लिये असली दुश्मन से न लड़कर आपस में लड़ने लगे। हत्या की राजनीति की विकृतियां उत्पन्न हुईं। सरकार दर्शक मात्र रही।

क्रांति का चक्र चल रहा है। यह काल चक्र है। उथल-पुथल हेर-फेर होंगे ही। असफलताओं से सफलता को खींचा जाता है। नया नेतृत्व सुपथ देगा, तब, जब आदर्श, त्याग और श्रम से काम लेगा, लेना नहीं देना की पद्धति का हामी होगा। अपने आदर्श से, चरित्र से भ्रष्टाचार की सफाई करेगा। जब समाज श्रद्धा और प्रेम का होगा तो स्वतः सेवा का अधिकार हो जायेगा और यह होगा ही। युवा पीढ़ी ही विचार क्रांति को जीवन क्रांति में बदलेगी।

तन परदेशी, मन देशी

राजस्थान की शूर वीरता व विभिन्न कलाओं से यूरोपवासियों को परिचय कराने वाली दो विभूतियां

डा. मनोहरलाल गोयल, जमशेदपुर

तन विदेशी और मन देसी, और देशी में भी राजस्थानी। ऐसे ही एक व्यक्ति का नाम है- एल.पी. तेस्सितोरी। जन्म इटली में हुआ सन् १८८७ में और मृत्यु २२ नवम्बर १९१९ को बीकानेर में। राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति को विश्वव्यापी ख्याति दिलाने में इस विदेशी विद्वान और साहित्य मर्मज्ञ की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। कौन जानता था कि इटली के उदीने नामक गांव में जन्मा यह बालक एक दिन संस्कृत भाषा का विद्वान बनकर भारत आयेगा? उसने स्नातक की पढ़ाई के बाद बाल्मीकि रामायण और तुलसीदास की रामचरित मानस के तुलनात्मक अध्ययन पर अपना शोध तैयार करके डाक्ट्रेट की उपाधि प्राप्त की और यह सिद्ध कर दिया कि उसके विदेशी तन में भारत के प्रति असीम प्यार है। उसका मन पूरी तरह से भारतीय है। डा. ग्रियर्सन भी भारतीय भाषाविद् थे और भारतीय भाषाओं पर उन्होंने काफी शोध किया था। वे तेस्सितोरी की विद्वता से काफी प्रभावित हुए और उन्हें भारत बुला लिया। भारत में उन्हें कोलकाता की एसियाटिक सोसाइटी के अन्तर्गत राजपूताना का ऐतिहासिक सर्वेक्षण कार्य करना था। वे ८ अप्रैल १९१४ को भारत आए। यहां उन्होंने प्रारंभिक तीन माह कोलकाता में बिताये और उसके बाद अपने साहित्यिक शोध कार्यक्रमों को गति देने के लिए जोधपुर चले गए। जोधपुर पहुंच कर वे अपने उद्देश्य हस्तलिखित ग्रंथों की एक विवरणात्मक सूची तैयार करने में लग गए। इस काम में उन्हें श्री रामकरण आसोपासे काफी मदद मिली। बीकानेर में जैन धर्माचार्य विजय धर्म सूरी से उन्हें अपने काम में सहयोग मिला। विजयधर्म सूरी के माध्यम से उन्होंने अनेकों धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन किया और राजस्थान के साहित्य और संस्कृति को समझने का अवसर पाया। वे इससे अत्यधिक प्रभावित हुए। इसी क्रम में उन्होंने कई राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रंथों का इटालियन भाषा में अनुवाद भी किया।

साहित्य साधना, ग्रंथों के संकलन, अध्ययन, उनकी विवरणिका तैयार करने के साथ-साथ उन्होंने पुरातत्व के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किया। खुदाई कार्यों के माध्यम से भी अपनी खोज को गति दी। डा. तेस्सितोरी ने घग्घर नदी के तल में बीकानेर के सबसे प्राचीन रंगमहल आदि स्थानों की खुदाई करवायी जिसमें मिट्टी के भांड, सिक्के टैराकोटा जैसी अनेकों दुर्लभ वस्तुएं मिलीं। राजस्थान के किसी भी क्षेत्र से उन्हें शिलालेखों, कीर्ति स्तंभों या देवालयों की जानकारी मिलती तो वे वहां पहुंच जाते और गहराई से उसका अध्ययन करते। यह बताने की जरूरत नहीं कि राजस्थान से उन्हें गहरा लगाव हो गया था। उनकी रग-रग में राजस्थान और राजस्थानी के प्रति प्रेम भरा था। उन्होंने डिंगल साहित्य की भरपूर सेवा की।

इसी क्रम में एक घटना का उल्लेख सामयिक होगा। एक बार वे राजस्थान निवासी एक स्टेशन मास्टर से भेंटा गए। ये राजस्थानी में बोले जा रहे थे और वह, राजस्थानी स्टेशन मास्टर अंग्रेजी में। इससे तेस्सितोरी को बहुत पीड़ा हुई। उन्होंने उसे फटकारते हुए कहा- एक विदेशी होते हुए भी मुझे तुम्हारी मारवाड़ी भाषा से बहुतप्रेम है। तुम्हें देश के प्रति बहुत बड़ी भावना लेकर मैं अपनी मातृभूमि से दूर यहां आया हूं। तुम्हारे देश को और भाषा को विदेशियों के बीच उचित सम्मान देने के लिए मैं तुमसे मारवाड़ी में बातचीत कर रहा हूं। मैं इसमें अपने देश इटली की उदार भावना और तुम्हारे देश की प्रतिष्ठा समझता हूं। लेकिन तुम हो कि अंग्रेजी भाषा में बोले जा रहे हो और शायद इसमें गौरव का अनुभव करते हो। मातृभाषा में बोलने में किसी को भी गर्व होना चाहिये। परन्तु तुम मारवाड़ी होकर भी उसे बोलने में शरमाते हो। तुमको अपने देश और अपनी मातृभाषा पर अभिमान होना चाहिये। तुम्हारी भाषा जीवित रहेगी, तभी तुम, तुम्हारी संस्कृति और तुम्हारा देश जीवित रह सकेगा। कितने लोग हैं ऐसा सोच रखने वाले?

लेकिन दुख है कि यह राजस्थानी प्रेमी अधिक दिन जीवित नहीं रहा। अपनी मां की गंभीर बीमारी की खबर सुनकर वह इटली चला गया। लेकिन मां के अंतिम दर्शन नहीं हो सके। उसे बहुत आघात लगा। कुछ समय इटली में रह कर वह पुनः भारत लौट आया। अधिक भाग दौड़ और मां की मृत्यु से वह टूट गया और बीमार रहने लगा। और कुछ ही समय बाद परलोक सिधार गया। इस तरह एक विदेशी पर राजस्थान का सच्चा प्रेमी और राजस्थानी साहित्य का समर्पित गुण ग्राहक, धोरां धरती में समा गया।

एक अन्य विदेशी हैं- कर्नल जेम्स टाड। ये स्कॉटलैंड के मूल निवासी थे। राजस्थान के शौर्य और वीरता से परिपूर्ण इतिहास ने इन्हें इतना प्रभावित किया कि वे राजस्थान के होकर रह गये। इनका जन्म १७८२ में इंगलिस्टन नामक स्थान पर हुआ था। ये तकनीकी विशेषज्ञ थे और प्रारंभ में इन्हें दिल्ली के निकट एक पुरानी नहर की देखरेख सौंपी गयी थी। बाद में ईस्ट इंडिया कंपनी में एक उच्च सेनाधिकारी बनाए गए। इस पद पर रहते हुए इन्हें राजस्थान आने जाने और यहां

के जनजीवन से रूबरू होने का अवसर मिला। सन् १८१७ में ये पश्चिमी राजस्थान के पोलीटिकल एजेंट बनाए गए। तब उन्होंने राजस्थान के इतिहास से जुड़ी दो महत्वपूर्ण पुस्तकें- 'एनाल्स एण्ड एण्टी किटीज ऑफ राजस्थान' तथा 'पश्चिमी राजस्थान की यात्रा' लिखी। प्रथम ग्रंथ दो भागों में है जिसमें ८५ अध्याय हैं। पहले भाग में राजपुताना की भौगोलिक स्थिति, राजाओं की वंशावलियां, शासन व्यवस्था और मेवाड़ की स्थिति तथा दूसरे भाग में मारवाड़, आमेर, बीकानेर, जैसलमेर व हड़ौती आदि रजवाड़ों का वर्णन है। दूसरे ग्रंथ में राजपूतों की मान्यताओं, परम्पराओं, मंदिरों और आदिवासी जन जीवन का चित्रण है। इन ग्रंथों से यह बात भी साफ है कि तत्कालीन राजपुताना का इतिहस राजपूती शौर्य और वीरता का इतिहास रहा है।

इन ग्रंथों को पढ़कर और तथ्य को जानकर सम्पूर्ण यूरोप आश्चर्य चकित रह गया था कि राजपूताने की छोटी से छोटी भी ऐसी कोई रियासत या रजवाड़ा नहीं था, जहां थर्मोपोली जैसी रणभूमि नहीं हो। ऐसा कोई नगर या गांव भी नहीं था, जहां लियानोडास जैसा वीर पुरुष पैदा नहीं हुआ हो। १७ नवम्बर १८३५ को इस राजस्थानी इतिहासज्ञ कर्नल टॉड का निधन हो गया। इन दोनों विदेशियों ने राजस्थान के बिखरे इतिहास को एकत्रित किया और दुनिया के सामने ला दिया। राजस्थान इन दोनों राजस्थानी प्रेमियों का ऋणी है और राजस्थान के स्थापना दिवस के अवसर पर इन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

ऐसा नहीं है कि विदेशियों ने ही राजस्थान के इतिहास की खोज की है और नये अध्याय लिखे हैं। इस सूची में अगरचंद नाहटा, डा. गौरीशंकर हीराचंद ओझा, मुनि जिन विजय, पं. झाबरमल शर्मा, नरोत्तम दास स्वामी, रावत सारस्वत, सीताराम लालस आदि के नाम भी शामिल किए जा सकते हैं, जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में शोधकार्य करके राजस्थान और राजस्थानी का सम्मान बढ़ाया है।

धरोहर

-शिवचरण मंत्री

पुरानी घटना है। यातायात दूर संचार के साधनों का उस समय में नितांत अभाव था। पैदल, हाथी, घोड़ा, ऊँट, बैल, खच्चर गाड़ी आदि से लोग यात्रा करते थे। सिख धर्म के प्रवतर्क, निर्गुनी संत नानक घूमते घूमते बगदाद जा पहुंचे।

बगदाद का तत्कालीन शासक- खलीफा बड़ा अत्याचारी था। वह लुटेरा था, लालची था और प्रजा को धन के लिए तंग करता रहता था। प्रजा उसके इस अन्याय से दुखी थी, पर मौन थी। सारे अत्याचार चुपचाप सहन कर लेती थी।

एक दिन खलीफा गुरु नानक से मिलने उनके आश्रम पर आया। नानक ने उसे ससम्मान बैठाया। धार्मिक चर्चा हुई। नानक देव ने बातों में खलीफा से कहा : 'आप मेरी एक धरोहर अपने पास रखने की कृपा करें।'

'अवश्य।' खलीफा ने प्रेम से कहा : 'यह मेरा सौभाग्य होगा, कृपया आप अपनी धरोहर दें।'

नानक ने खलीफा की बात सुन कर सामने के कंकड़ों के ढेर की ओर इशारा करते हुए कहा 'मेरी धरोहर ये कंकड़ है।'

'आपकी धरोहर ये कंकड़?' खलीफा ने एक अट्टाहास किया और बोला : 'आप यह धरोहर कब वापिस लेंगे?'

''मुझे इसको लेने की जल्दी नहीं है?''

''फिर भी आप समय तो बतायें?''

''तुम मुझे यह धरोहर कयामत के दिन लौटा देना क्योंकि अब हमारा मिलन कयामत के दिन ही होगा।'' नानक ने खलीफा को नम्रता से कहा।

''देव, आप कैसी बात करते हो?''

''क्यों, क्या हुआ?'' नानक ने प्रश्न किया?

''कयामत के दिन! क्या खूब! उस दिन तो कोई कुछ भी नहीं लेजा सकता है, फिर आपके ये बेकार, कूड़ा करकट कंकड़?'' नानक ने खलीफा को फटकारते हुए कहा- ''खलीफा, तुमने बात तो सच कही है। जब तुम यह जानते हो कि कयामत के दिन कोई कुछ भी नहीं ले जा सकता है तब तुमने प्रजा को सता का यह अथाह सम्पत्ति क्यों एकत्रित की है? प्रजा को सता कर एकत्रित की गई तुम्हारी यह सम्पत्ति तुम्हारे साथ कयामत के दिन जब जाने वाली नहीं तो फिर तुम अथाह सम्पत्ति क्यों बटोर रहे हो? नानक ने खलीफा को समझाते हुए कहा।

खलीफा देव की बात सुन कर उनके चरणों में गिर पड़ा और अपनी भूल पर पश्चाताप करने लगा और उसने अपनी एकत्रित सारी सम्पत्ति दीन दुखियों को दे दी।

-आग से जलते हुए एक ही सूखे वृक्ष से समस्त वन इस प्रकार जल जाता है जैसे एक ही कुपुत्र से समूचा कुल।

-चाणक्य

कुलीन कन्या कुरुप भी हो तो विवाह कर लो, किन्तु नीच संस्कारों वाली सुन्दर स्त्री से कभी विवाह मत करो।

-चाणक्य

ठोकर लगे और दर्द उठे तभी मैं सीख पाता हूं।

-गाँधी

मनुष्य जिससे डरता है, उससे प्रेम नहीं करता।

-अरस्तू

बंद दरवाजौ

-योगेश पंडया-

अनुवादक : डॉ. नृसिंह राजपुरोहित

मा रै रामशरण व्हियां पछै मनोहर दूजी कै तीजी वार घरां आवण आळौ हो। मा बैठी जितरै तो बो मौको मिळतां ई जाणै ओ आयौ। दीवाली रै मौके अर उन्हाळै री छुट्टियां में वो दोनूं टाबरां अर वांरी मा दक्षा नै ई सागै लेयनै आवतौ। डोकरी वांनै देखतांई राजी रेड़ होय जावती। पण शनि-रवि री छुट्‌टी में वो अेकलौ ई आवंतौ तद उणनै ओळमौ सुणणौ पड़तौ- 'भलां मिनख टोकळा व्है जेहड़ौ, अेकलौ आयौ है, टाबरां नैं सागै लावतौ तो कितरौ ठीक रैवतौ। बीनणी नै मिळ्यां नै तो जाणै जुग-जमानौ बीतग्यौ, यूं लखावै रै बेटा।'

'पण मा टाबरियां रै तो स्कूल चालू है नीं। यूं बार-बार वांनै गांव लावू तो वांरी पढ़ाई में हरज पड़ै।' बेटा रै मूंढै सूं आ री आ बात बार-बार सुण नै डोकरी निसासौ नाखं 'र कैवती 'बेटा, थौ तो हर वखत आ रही आ बात। पण म्है तो अबै पाकौ पान हूं भाई। राम जाणै कद झड़ जावूं। कदाच थूं अमदावात सिधौवे अर लारै म्हैं ई रवानै होय जावूं।'

'इसी बात नीं करणी मा हाल तो थनै घणा बरस जीवणौ है। देख हाल तो मोटा भाई रै प्रवीण नै परणावणौ है हर पछै उणरा टाबरां नैं ई थनै रमाणा है। इणरै पछै ज्यूं रामजी री मरजी होसी त्यूं होय जासी।'

मां हंसती थकी बोली- 'अेक पलक री ई ठा नीं पड़ै रै बेटा। पांचम री छट्‌ठ करणी तो मोयी बात, पण आंख उघाड़णी ई हाथ कोनीं रै।'

अर मा कह्‌यो जिकी बात इज साची हुई। छेहली बार वो आयौ तद मा नै तेड़का सारू ई आयौ हो। उणैं आपरा मोटा भाई नै कह्‌यो अर भाभी सूं ई बात करी। पण भाई तो 'थारौ मन होवै अर मा सागै चालै तो भलांई लिजावै क्यूं नीं, म्हैं ना क्यूं देवूं?' उणैं आपरी भाभी नैं ई बात करी- 'भाभी अेक बात पूछूं थांनै।'

भाभी उणरै चेहरै कानी खरी मीट सूं देख्यौ अर मन में सोच्यौ- देवर घर में सूं आपरै बंटवाड़ै रो खुलासौ करण तांई आयौ दीसै। मन में आयै विचार रा अेहनाण उणरै चेहरै माथै ई सुभट दीखण लाग्या।

पण मनोहर उणरै मन में पैदा हुयै वहम रौ खुलासौ कारतां कह्‌यो- 'थै चिंता मत करजौ, भाभी। दूजी कोई बात कोनी।'

'तो'? भाभी आपरी जिज्ञासा रोक नीं सकी।

'म्हें तो मा री बात करूं भाभी। म्हैं अबकाळै मा नै म्हारै सागै अहमदाबाद लिबा रै विचार सूं आयौ हूं। म्हैं भाई साब व नै आ बात करी अर अबै थांनै ई पूछ रह्‌यौ यूं। दक्षा नित रोज मा-मा करनै म्हारा कान खावै, इण वास्तै थै कैवो तो अबकाळै मा नैं ई म्हारै सागै लैयनै जावूं।'

मनोहर री बात सुण नैं भाभी रै जीव नै नेहचौ हुयौ। छाती माथै सूं जाणै मण भरियौ बोझो उतरग्यौ। वे मनोमन गेहरा राजी रेड़ होवता थकां बोल्या- 'थै माजी नै थारै सागै लिजवाण चावौ तो खुशी-खुशी लिजावौनीं, म्है ना क्यूं देवूं?' म्हैं तो उल्टौ थांनै कई बार केवती रैवूं के थै मौकौ आयां अठी-अठी बारै जायबौ करो। इणसूं 'चैंज' आवै अर मन ई राजी रैवै। थेई थोड़ा यांनै समझाई जौ।'

पण भाभी री बात सुण नै अेकदम नाराज होग्या अर रीसां बळता कैवण लाग्या 'क्यूं कांई बात है? म्हैं थांनै सुहावूं कोनीं कांई? जे इसीज बात होवै तो साफ कैय दींजौ। म्हैं हरद्वार वुई जासूं। रोटी टुकड़ौ उठै ई मिळ जासी अर थारै ई दैण मिट जासी।'

'लो सुण लियौ मनोहरजी वीरां? आ हालत है इणां री। जे इणांनै कोई सवाळ बात कैरवां तो ई इण भांत भवाड़ा करे। हे राम।' भाभी रै चेहरै माथै रीस री ललाई छायगी। वे बोल्या- 'हे भगवान। कोई बाड़ कांटा सुणै तो ई कांई समझै? जाणै बापड़ी डोकरी नैं सांचाणी अै दुख देवता होवैला ओ।'

'तो दुख देवण में थे बाकी फेर कांई राख्यौ है?' डोकरी बराड़ा करतां कह्यो- 'थै धणी-लुगाई दोनूं जणां मिळनैं म्हारै कनैं जिकौई कीं हो वो सगळौई लेय लियौ अर अबै ओ मकान रौ ढूंडौ ई दबावण री तजवीज चाल रही है। म्हैं गैली कोनीं। मैं समझूं हूं। पण सुण लीजौ- कान खोलनै कै मकान तो थंनै नींज मिळै।'

'थांरो ओ मकान म्हारै चाइजै आथ कोनीं।'

'अरे थारै तो मकान कांई म्हैं आप ई कोनीं चाहीजूं अबै तो। जरूरत ही जितरै घणी ई चोखी लागती पण अबै जावौ भलांई वाढ़िया सालां में। दो झड़ी गाय टळी के पछै कांई कामरी।'

'बस-बस मा। अबै बोलणौ बंद करौ।' मनोहर बोल्यौ कै मा रोवण लालगी अर हुचकै भरीजगी। पछै कैवण लागी- 'देख ले मनु-थारी मौजूदगी में ई आ महाराणी इतरी बोलै है तो सोच कै थारी गैर मौजूदगी में आ म्हनै कांई-कांई नीं सुणावती व्हैला। अबै तो आ हालत है बेटा के टाबरिया म्हारै कनैं आय जावै तो ई इणनै नीं सुहावै। अै तो नासमझ पशुड़ा है बापड़ा। आ यानै डरावै के डोकरी रै शरीर मोतीरोग है, जे थै इणरै कनै गया तो थै ई बिमार पड़ जासौ। पण टाबरिया तो भोळमार ठैरियां। सो अै ना-ना करतां ई म्हारै कनै आय जावै तो इणां नै पकड़'र लिजावै अर कमरै में बंद कर नांखै।

छेहली वार सातम्-आठम री छुट्टियां में मनोहर जद दक्षा अर टाबरां नै लेय नै आयौ हो तो पाछा आवंता री बखत ट्रेन में बैठां-बैठां दक्षा, भाभी अर मा रै बिचाळै पड़ी खाई रौ अंदाज तो बता इज दियौ हो। इण कारण उणैं अमदावाद पूगतां पांण भाई अर

भागी नै कागद लिख'र कैय दियौ के मा रै इलाज रै मिस ई अेकर थै सगळा जणा अठै आवौ। पण भाई, भाभी के मा कोई नीं आया। इणै इण बाबत फेरूं कागद लिख्यौ तो भाई रौ पडुत्तर आयौ के मा री उठै आवण री इच्छा कोनीं अर अबै वांरो शरीर ई ठीक है।

पण आ खटपट ठेट पच्चीस-तीस हजार री रोकड़ी मिलकत अर पिताजी रै नामै री धौड़ा घर तांई पूग जासी, आ उम्मीद नीं ही। म्हैं छेहली बार घरां आयौ तद मा म्हनै कैय दियो हो कै वा अबै घणा दिनां री पावंणी कोनीं। यूं पचास-साठ री अवस्था माथै आयां हरेक निमख रै मूंढ़ै सूं इसी बात किनळै इज पण मा तो हाल राजबाण निजर आवै ही।

पण वो बारेक बज्यां रात रा अमदावाद पूगौ घर घरां जायनै सूतौ कै परोढ़ियै बेगौ भाई रौ फान आयौ। पड़ोसी बुलावण तांई आयौ अर भाई रौ आवाज सुणिज्यौ- 'मनु। मा चालती रही। थै सगळाजणा तुरत घरां पूगो। म्हे सगळी ठौड़ फोन सूं समाचार कर दिया है। भुआजी रै अठै ई थूं इतला कर दीजै।'

समाचार सुण'र वो बगनौ सो व्हैग्यो। मूंढ़ै सूं एक आखर ई नीं बोल सक्यौ। वो भगौड़ा पगां घरां पूगौ तो दक्षा चाय बणवती थकी उणरी बाट इज जोवै ही। घर में वळताई वा बोली- 'कांई बात है? आज दिनूंगै ई दिनूगै किणरौ फोन आयो?' पण दक्षा री बात पूरी हुयां पै 'लीज वो उणै खवै माथै आपरौ माथौ टेक नैं छिबरां-छिबरां रोवण लाग्यौ...।

मनोहर टाबरां सागै घरां पूगौ जितरै दसेक बजग्या हा। हा उतावळा पणां घर में वळियौ। भाई बारै इज ऊभा हा। वो भाई रै गळै में काठी बाथ थाल नै ढाडण लागग्यो। भाई उणनै छाती रै चेप्यो अर पछै पाणी रौ गिलास पकड़ाय नैं नीठ छानौ राख्यौ। कह्यो- 'थारी'ज उडीक ही भाई। बाकी तो सगळा जणा आयग्या है।'

वो मांयला ओरड़ा में गयौ।

मा रौ जीव कांई विचार करतां निकळयौ होसी? प्राण छूटती बखत उणैं म्हनैं जरूर याद कियौ होसी- वो सोचण लाग्यौ। यूं पणा वा अबै मन सूं पूरी दुखी ही। भाई-भाभी रौ बैवार उणरै सागै आछौं नीं हो।

पण अबै अै सगळी बातां याद कियां सूं कांई लाभ?

उणै देख्यौ-

मा आंख्यां मींच नैं सूती ही।

वौ उणनै यूं साफ शांति सूं नेहचा सूं अर निरांत सूं सूतौड़ी पै 'लड़ी वार देखै हो।

'मा। म्हैं आयग्यौ म्हारी जामण लेकर तो आंख उधोड़।'

'मायड़। अबै थूं म्हनै कद मिळती अर कियां मिळसी?'

'आंपां मा-बेटौ फेरूं किसै जनम कांई ठा?...'

मनोहर नीचौ नम्यौ अर मा रै पगां रै माथौ अड़ायौ।

ऊभौ हुयौ तो यूं लखायौ जांणै मा हंसै ही। जाणै कैवै ही- 'म्हैं थनै कही जिकी बात साची हुईक नीं मूरख? थोड़ौ बेगौ आयो होवतौ तो...'

मनोहर गाढ़ नीं राख सक्यौ अर पछै जोर-जोर सूं रोवण लाग्यौ।

पछै तो बारै-दिन किंयां बीतग्या कीं ठा ई नीं पड़ी। मा रै बिना इण घर में अेकूकौ दिन उणनै अेकूका बरस जिसौ लखायौ। पण किंयां ई अै दिन काढ़णा पड़्या अर छेवट तेरवैं दिन, रात री बस में वो टाबरां सागै रवानै होयग्यौ।

मासिया खतम हुया। बरसी रौ काम ई निवड़्यौ। खुद अकेली गांव जाय नै पाछौ आयग्यौ। शनि-रवि री छुट्टी पड़ती तो ई अबै उणरौ घरां जावण रौ मन नीं होवतौ मा बैठी ही जितरै बात दूजी ही। अबै उठै जावण रौ मन ई नीं करतौ।

पण आज बीं नै जंची के मा नीं है तो भाई-भाभी तो है। चालौ वां नै ई मिळनै आय जावूं। घर री भींता माथै हाथ फैर नै आय जासूं तो ई जीव नै थोड़ौ नेहचौ होय जासी।

पण मा गयां पछै उणरै शरीर में ब्लड-प्रेशर री शिकायत शुरू होयगी। मन हर बखत उदास रैवैण लाग्यौ कठैई जीव लागतो आथ नीं। ओ विचार हर वखत मांयनौ रौ मांयनै मन नै मथतौ रह्यौ के म्हारै कहयां उपरांत ई कीं दिन मा अमदावाद ठैरी कोनीं।

यूं बीच-बीच में वा दो-च्यार बार आई तो एक-दिन ठैरनें तुरंत रवानै होयगी। जावती-जावती आ बात ई कैवती गई कै- 'मनु बेटा मन में कीं खौटौ मत लगाईजैस सही बात तो आ कै थारै बापूजी रै हाथ सूं बणायौड़ा घर रै सिवाय म्हारौ मन कठैई लागै आथ नीं। इण वास्तै वो घर भलौ नैं म्हैं भली।'

उण दिन वो घरां पूग्यौ तो भाई घरां नहीं हा। भाभी घर में इज हा। वो घर में पूग्यो तो उणनै घणौ आचूंभौ हुयो।

घर माथै नळियां री ठौड़ स्लेब निजर आई। मांयलै कानी ई काम चालू हो। इणसूं मकान री 'सिंकल' इज बदळगी ही। 'घर में ओ सगळौ सुधारै रौ काम जरूरी हो।' भाभी कीं अहंकार अर क्षोभ सागै कह्यौ। काची भींतां री ठौड़ पाकी भींतां त्यार व्हैगी ही। ओसरी आळौ मकान पटक नैं ब्लाक रै रूप में बदळ दियौ हो। भींतां माथै मा रै हाथ सूं कोरयौड़ा मोर सूंवटा, चिड़ियां, तोरण नै टोडलिया कठैई निगै नीं आवै हा। वांरी ठौड़ कमरै में नुवां-नुवां वालपीस आयग्या हा। उणै भींत माथै हाथ फेर नै देख्यौ तो पलास्टर माखण जिसौ चीकणौ लाग्यौ।

'चाय लैसो कै कॉफी?' भाभी पूछवा नै आया।

'कोई पण चीज चाल जासी।' पछै पूछ्यौ- 'भाभी। म्हारा भाई सा'ब कठै?'

'वे तो ट्रेनिंग में गयौड़ा है। वो काम पूरौ हुयां पछै इज आय सकसी।'

'ओ! आ बात है?' वो पलंग माथै लांबौ होवतौ थकौ बोल्यौ। इतराक में दोनूं टाबर स्कूल री छुट्टी हुयां घरा आयग्या। उणै टाबरां रो लाड कियौ अर थैली में सूं पेड़ा रो बॉक्स अर चीवड़ै री पेटी बारै काढ्या। पण टाबर उणरै कनैं नीं आया।

चाय पीवंता-पीवंता बीं नै कीं याद आयग्यौ। उणैं अठी-अठी च्यारूंमेर देख्यौ पण मार अर बापूजी रौ फोटू कठैई निंगै नीं आयो। उणै ओसरी, कमरा अर रसोड़ै कानी च्यारूंमेर निजर फेरी पण फोटू कठैई नीं हो।

भाभी बारै आया अर पूछण लाग्या 'रसोई कांई बणावूं देवरजी?'

'होसी जिकोई चालसी भाभी।' इतरौ कैयनैं वो ऊभौ हुयौ अर अठी-अठी फिरण लाग्यौ। उणनै लाग्यौ के मा अर पिताजी उणरै सागै छिपनाचोरी रम रह्या है अर पकड़ में नीं आय रह्या है। पण छिनेक में सोचण लाग्यौ के वो किसीक सफा टाबरां जिसी बातां सोच रह्यौ है?

वो ऊभौ हुयौ अर आधेक घंटे तांई घर में अठी-अठी आंटा मारतौ रह्यौ। पण उणरौ मन कठैई लाग्यौ नीं तो भाभी नै कैवण लाग्यौ- 'भाभी म्हैं अबै चासूं।'

'इतरी उतावळ क्यूं करौ? अेकाध दिन तो ठैर जावौनीं। भाभी मनवार करी पण मनोहर नैं लखायौ के इण मनवार में वो मा जिसौ मिठास नीं है। पण अबै इण बातां में कांई सार है? कितरोई विचार करलौ, मा तो अबै मनवार करण तांई आवण सूं रही। अबै ठेट गळी रै नाकै तांई पुगावण तांई कोई आवण आळौ कोनीं।

वो ऊभौ हुयौ अर दोनूं टाबरां नै वारै हाथों में दस-दस रा दो-नोट पकड़ाया अर पछै दरवाजै तांई जायनै पाछौ वळियौ अर कैवण लाग्यौ- 'भाभी वो मर अर बापूजी आळौ फोटू कठै?'

'हां, वो फोटू तो ओ मांटू बॉल सूं खेलै हो के आफळ नै भींत सूं नीचे पड़यौ अर टूटग्यौ।' इतरौ कैयनै वे कमरै रै लारली कानी गया अर फोटू लेयनै आया। मनोहर देख्यौ कै माथलौ काच तो फूट इजग्यो हो नै सिमेंट, धूड़ कचरौ लागण सूं फोटू सफा मगसौ पड़ग्यौ हो।

भाभी फोटू हाथ में पकड़यां ऊभा हा। मनोहर कैवण लाग्यौ- 'म्है इणनै लेय जाऊं? इणी नुंवी कापी कराय नै पाछौ भेज देसूं।'

'हां-हां लेय जावौ नीं। जरूर लेय जावौ। पण नुंवी कराय नैं अठै पाछौ भेजण री जरूरत कोनीं। अठै फेरूं छोकरा रमतां-रमतां तोड़ नांखसी।' कैवतां-कैवतां भाभी फोटू लैयनैं मनोहर रै हाथ में पकड़ाय दियौ। पण भाभी रै कहयौड़ा शब्द मनोहर रै काळजै में तीर री गळाई चुभग्या।

उणैं फोटू नैं आपरे रूमाल सूं साफ कियौ अर थैली में घाल दियौ। पछै बोल्यो- तो जाऊं भाभी...।' अर रवानै व्हैग्यौ।

मनोहर थोड़ोक आगै जायनै पाछळ फोरी, तो देख्यौ कै मकान री दरवाजौ बंद होयग्यो हो।

'चून्दड़'

-डॉ. बस्तीलाल सोलंकी

रंगदे रंगरेजण'रा लाल।
म्हांरी चून्दड़ रंगदे रै॥
चोखो रंगजे पाको रंग।
जोधाणो-बीकाणो संग॥
चितौड़ी केसरियौ रंग।
लहरियौ पिछोलां री पाळ।
म्हांरी चून्दड़ रंगदे रै॥
जुंझारो दुरगो राठौड़।
सांगो-कुम्भोमाथै मोड़।
भामासा सा सेठ किरोड़॥
दायी पन्नारो वो लाल।
म्हांरी चून्दड़ रंगदे रै॥
बीच में बादळ अर गोरा।
चव्हाणै राव पिथोरां॥
गुरु गोविन्द रा छोरा॥
हलदी घाटी रगतालाल।

म्हांरी चून्दड़ रंग दे रै॥
कोरो मत राखजै पल्लो।
कोरजे कमधज्यौ कल्लो॥
मांडदे राव जय मल्लो॥
शिव-प्रताप री ढाल।
म्हांरी चून्दड़ रंग दे रै॥
पैले पल्लै रणत भवानी।
दूजै पल्लै लिझमी राणी॥
तीजै हाडी री सैनाणी॥
चोथै पदमण री ज्वाल।
म्हांरी चून्दड़ रंगदे रै।
मांड दे सीमा रो रखवाळों।
हमीद-सैतानों मूंछाळो॥
टूट्योड़ो पेन्टन रूपाळो।
शास्त्रीजी बहादुर लाल।
म्हांरी चून्दड़ रंग दे रै।

-भगवान ने मानव को इतना दिया कि उसे मांगने की आवश्यकता ही न रहे, किन्तु मनुष्य की मांगने की आदत न छूटी। मृत्यु पर किसी का वश नही चलता। वह किसी की प्रतीक्षा नहीं करती। इसलिए जब तक शरीर में श्वास है, तभी तक हमें इस शरीर का लाभ उठा लेना चाहिये।

....

सब मिथ्या देवी-देवताओं को भुला दो, पचास वर्ष तक कोई उनका स्मरण न करे। यह हमारी ज्योति ही एकमात्र ईश्वर है, सशरीर वह सर्वत्र उपस्थित है, सर्वत्र भुजाएं, सर्वत्र उसके चरण, उसके चक्षु विद्यमान हैं शेष सब देवता प्रसुप्त हैं चतुर्दिक व्याप्त इस विराट को छोड़कर हम और किस ईश्वर को भजने जायें। सब पुजाओं में श्रेष्ठ है इसी विचार की पूजा अर्थात् यही हमारे परिवेशी प्राणी समाज की सेवा- ये सब पशु, मानव आदि ही हमारे देवत्य हैं और हमारे सर्वप्रथम आराध्य हैं। हमारे देशवासी, हमारे जातीय बन्धु...।

-स्वामी विवेकानंद

मीरा के राम

श्री राम और श्री कृष्ण में अभेद था, परन्तु साधना के क्षेत्र में श्री कृष्ण के सगुण रूप के प्रति ही मीरा का विशिष्ट आकर्षण था।

भारतीय इतिहास के मध्यकाल के दूसरे चरण के आरंभ में चित्तौड़ के राजराजेश्वर महाराणा सांगा की पुत्रवधू राजरानी मीराबाई ने राजकीय वैभव को तिलांजलि देकर वृन्दावन के प्रेम देवता भगवान गिरिधर गोपाल की प्रेमा भक्ति-साधना की। वे श्रीकृष्ण की उपासिका थी उनका सम्पूर्ण जीवन श्री कृष्ण की अनुरक्ति के सागर में आकंठ डूबा था। उनके अनेक पदों में श्री राम नाम के प्रति निर्मल श्रद्धा और पवित्र भक्ति का उल्लेख मिलता है। उन्होंने अपने पदों में श्रीकृष्ण के सगुण रूप का माधुर्यपूर्ण सौन्दर्य निरूपित किया है। अनेक प्रकीर्ण पदों में निर्गुण राम के नाम की महिमा भी गायी है। उनकी दृष्टि में श्री राम और श्री कृष्ण में अभेद था, परन्तु साधना के क्षेत्र में श्री कृष्ण के सगुण रूप के प्रति ही उनका विशिष्ट आकर्षण था। साथ ही रामनाम के प्रभाव और महिमा का गान किए बिना भी वे नहीं रह सकी थी। वे संत रैदासे के निर्गुण पदों के साथ निर्मल भगवद्भक्ति से बहुत प्रभावित थीं तथा उन्हें अपना गुरु मानती थी।

खोजत फिरौ भेद वा घर को, कोइ न करत बखानी।
रैदास संत मिले मोहि सतगुरु, दीन्हीं सुरत-सहदानी॥

राणा विक्रमसिंह द्वारा यातना दिए जाने पर भक्तिमती मीरा ने अपने एक विशेष दूत के हाथ काशी में श्री गोस्वामी तुलसीदास के पास पत्र भेज कर पूछा था कि 'साधुओं और हरिभक्तों के साथ भगवद्भजन करते देख राज परिवार के स्वजन मुझे प्रताड़ित कर रहे हैं, मेरा उचित पथ-प्रदर्शन कीजिए।'

तुलसीदास जी का उत्तर था-

'जाके प्रिय न राम वैदेही,
तजिये ताहि कोटि बैरी समय, जद्यपि परम सनेही।'

अर्थात् 'जिसे श्री सीताराम प्रिय नहीं लगते, उसका परित्याग कर देना चाहिए भले ही वह अपना परम सगा हो, पर वह करोड़ों शत्रुओं के समान है। श्री राम के पद में ही स्नेह करना उचित है।' और मीरा ने उनका आदेश माना। उनके पदों में राम के उल्लेख का कारण तुलसीदास जी की भक्ति भावना का मीरा के हृदय पर प्रभाव भी कहा जा सकता है। उनकी भगवद्भक्ति साधना राम भक्तिमय वातावरण से अपने आपको दूर नहीं रख सकी। उन्होंने अपने पदों में निर्गुण राम-तत्व और राम-नाम का चिन्तन किया, रामरत्न धन की प्राप्ति संत सद्गुरु की कृपा से की तथा राम की भक्ति के रूप में जन्म-जन्म की पूंजी प्राप्त की।

पायौ जी मैंने राम रतन धन पायौ।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, करि किरपा अपनायौ।
जनम जनम की पूंजी पाई, जग में सबै खोवायौ।

भवसागर से पार उतारने के लिए उन्होंने प्रभु के विरह में पदों की रचना कर रामनाम का बेड़ा बांधा। वे अपने आपको सदैव यही कह कर आश्वस्त करती रहीं कि भव सागर के प्रबल वेग और अनन्त गहरी धारा में राम-नाम से निर्वाह हो सकता है।

भौसागर अति जोर कहिये अनंत ऊंडी धार,
राम-नाम का बांध बेड़ा उतर परले पार।

मीराबाई रामरस की परम अनुभव आस्वादिका थी। गिरिधर नागर की वियोगिनी मीरा ने श्री राम रस की योगिनी के रूप में निर्गुण उपासना के स्तर पर स्वानुभूति अभिव्यक्त की।

लागी मोहि राम खुमारी हो।
दीपक जोऊं ग्यान का, चढूं अगम अटारी हो।
मीरा दासी राम की, इमरत बलिहारी हो।

मीराबाई ने राम नाम को मुक्ति प्राप्ति का हेतु स्वीकार किया। उन्होंने अविनाशी हरि की राम-रट को अपने जीवन का सम्बल बताया।

मेरो मन रामहि राम रटै रे।
राम नाम जप लीजे प्राणी, कोटिक पाप कटै रे।
जनम जनम के खत जु पुराने, नामहि लेत फटै रे।
कनक कटोरे इमरत भरियो, पीवत कौन नटै रे।
मीरा के प्रभु हरि अविनासी, तन-मन ताहि पटै रे।

उनके राम घट-घट वासी, सर्व व्यक्त रूप में उनके पदों में अंकित है। उन्होंने निष्पक्ष दृष्टि से श्री राम की भी कृष्ण की ही तरह महिमा गायी है। उनकी साधना राम-नाम से गौरवान्वित तथा भक्तिपूर्ण रही, फिर भी थीं तो वे सदैव कृष्णमयी, गिरिधर गोविंद के चरणन की दासी ही। (राजस्थान पत्रिका से साभार)

डरते हो? किससे?
ईश्वर से? मूर्ख हो?
मनुष्य से? कायर हो?
पंचभूतों से? उनका सम्मान करो।
अपने से? जानो अपने आपको।
कहो- अहं बुद्धस्मि।

-स्वामी रामतीर्थ

'वेलेन्टाइन डे' बनाम प्रेम

एक विश्लेषण

-श्रीमती कोमल अग्रवाल, जूनागढ़

किसी दार्शनिक ने लिखा है 'मूर्खता के लिए बुद्धिमानी और विद्वानों के लिए मूर्खता का नाम ही प्रेम है।' आज भारत देश की विडम्बना यही है कि पाश्चात्य संस्कृति को अपनाकर सभी मूर्ख स्वयं को आधुनिक दिखाने की होड़ में प्रेम का सहारा ले रहे हैं जो महज एक मजाक के सिवा कुछ नहीं है। 'वेलेंटाइन डे' आज हर युवा दिल के लिए एक रोचक अहसास बन गया है। आज से अठावन वर्ष पूर्व जहां इन युवाओं के मन में देशप्रेम की ज्वाला पनप रही थी वहीं आज देशप्रेम के नाम से इन्हें चिढ़ होने लगती है। अंग्रेजों को देश से खदेड़ने वाले ये युवा आज उन्हीं अंग्रेजों की संस्कृति को वापस बुलाने दौड़ रहे हैं और इस रेस में हर व्यक्ति आगे निकलने की जी-तोड़ मेहनत कर रहा है। बड़े-बड़े महानगरों से लेकर छोटे शहरों तक दृष्टि घुमाएं तो पाएंगे कि स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस अथवा गाँधी जयन्ती आज युवाओं के लिए मात्र एक नेशनल होलीडे बन कर रह गया है जिसमें शहर के चौराहे में सिगरेट के उड़ाते धुएं के साथ वे भारतीय संस्कृति परंपराओं और देशप्रेम को भी मजाक बना हवा में उड़ा देते हैं। और इसी सन्दर्भ में 'वेलेन्टाइन डे' पर एक हाथ में गुलाब का फूल और दूसरे में गिफ्ट पैक लिए पार्क रेस्तरां, सिनेमा घर और पब्लिक प्लेसेज में काफी संख्या में नजर आते हैं।

सोचने और ध्यान देने की बात यह है हर वर्ष जैसे नेता अपनी पार्टी बदलते हैं वैसे ही वेलेंटाइन डे पर इनका पार्टनर भी बदलता रहता है। ऐसे में हर संवेदनशील व्यक्ति सोच में पड़ जाता है कि क्या यही प्यार है। क्या यही सार्थकता है वेलेंटाइन डे की? सही मायने में अपने ताउम्र रहने वाले जीवनसाथी के साथ इस पर्व को मनाना ही इसकी सार्थकता है। 'वेलेंटाइन डे' प्रतीक है उस प्रेम का जो कुछ पलों का नहीं, घंटों का नहीं, दिनों का नहीं, महीनों का अथवा सालों का नहीं। यह प्रतीक है सम्पूर्ण जीवन की भावना को जो केवल किसी एक के प्रति समर्पित होकर रहना है। यदि 'वेलेंटाइन डे' प्रेम नहीं है तो प्रेम भी वेलेंटाइन डे नहीं है। प्रेम वह भी नहीं है जिसका प्रदर्शन दूसरों के सामने किया जाए। प्रेम न ही कोई दिखाने की वस्तु है और न ही यह शब्दों फूल अथवा गिफ्ट पैक का मोहताज है।

प्रेम एक भावना है एक अहसास जिसे शब्दों में ढाला नहीं जा सकता न ही किसी परिधि में बांधा जा सकता है। प्रेम असीम विश्वास है, असीम धैर्य है और इससे भी असीम बल है। निराशा के गर्त में धकेलने वाला प्रेम इस लायक ही नहीं है कि उसे प्रेम की उपमा से अलंकृत किया जाए। यह प्रेम सिर्फ भावनाओं के साथ खिलवाड़ है जो चन्द पलों में गायब हो जाता है। आज जहां परिवेश बदला है, समाज बदला है वहीं प्रेम का स्वरूप भी बदला है। टेलीविजन पर प्रसारित हो रहे सिरियलों में दिखाए जा रहे 'प्रेम' की ओछी मानसिकता हमारे समाज के युवाओं के मुंह पर तमाचा है।

कवि रवीन्द्रनाथ ने लिखा है ''सत्य की सबसे बड़ी ऊंचाई है- प्रेम जो जीवन में सम्पूर्णता प्रदान करती है।'

आज किये जाने वाले प्रेम में मानसिकता और आत्मिक अहसास नदारद है कुछ है तो केवल शारीरिक सुख है। और हमारी युवा पीढ़ी के भटकते कदमों का एकमात्र कारण यही है। सही शब्दों में प्यार प्लवनशीला नदी की तरह है जिसमें स्थैर्य की भावना नहीं होती। प्यार या तो घटता है या बढ़ता है या इसका स्वरूप बदलता है लेकिन इसका वजूद कभी खत्म नहीं होता। यह अमिट है। सच्चे मन से किया जाने वाला प्रेम उतना ही होता है जितना कि हो नहीं सकता, नापा नहीं जा सकता और हरेक से किया नहीं जा सकता। उसकी अनुभूति हर उस सुख से ऊपर है जिसे हम अपनी आवश्यकता समझ बैठे हैं। लिखने का तात्पर्य है कि ''जागो युवा ''आशावादी बनो।'' प्रेम का सच्चा अर्थ समझ कर आशा के सुनहरे उज्जवल दैदीप्यमान भविष्य की ओर अपनी एक कदम उठाओ। क्योंकि हजारों मील लम्बी यात्रा करने के लिए पहला कदम उठाना जरूरी है।

प्रपत्र-४

समाचार पत्र पंजीयन केन्द्रीय कानून १९४६ (संशोधित) के आठवें नियम के साथ पढ़ी जाने वाली प्रेस तथा पुस्तक कानून की धारा १४डी उपधारा (बी) के अन्तर्गत समाज-विकास (मासिक) कोलकाता, नामक समाचार पत्र से संबंधित तथा स्वामित्व एवं अन्य बातों का ब्यौरा :-

प्रकाशन का स्थान : १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता-७००००७

प्रकाशन की अवधि : मासिक

मुद्रक का नाम : श्री भानीराम सुरेका

राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : ८, कैमक स्ट्रीट, कोलकाता-७०००१६

सम्पादक का नाम : श्री नन्दकिशोर जालान

राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : २६, अमहर्स्ट स्ट्रीट, कोलकाता-७००००९

मालिक : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता-७००००७

मैं, भानीराम सुरेका घोषित करता हूं कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं।

२५.३.२००६

-भानीराम सुरेका
प्रकाशन के हस्ताक्षर

50-60 YEARS OF EXCELLENCE IN QUALITY PRODUCTS

PRABHAT MARKETING CO. LTD.

4, Synagogue Street
2nd Floor, Room No. 201
Kolkata - 700001

Ph : 033-2242-2585/4654 55252587
E-mail rohitashwaj@hotmail.com
Website : www.jalangroup.net

AUTHORISED DISTRIBUTORS OF

FINOLEX INDUSTRIES LTD.

FOR

Sanitation & Plumbing Systems
Agricultural PIPES & FITTINGS

D-1/10, MIDC. CHINCHWAD
PUNE - 411019
www.finolex.com

स्वस्थ जीवन शैली अपनाना सम्भव है

-रामनिवास लखोटिया, अध्यक्ष : शाकाहार परिषद, नई दिल्ली

ग्रीष्म ऋतु आ रही है। हमें अपने आप को अधिक गर्मी या लू से बचाना भी है और स्वास्थ्य भी ठीक रखना है। गर्मी ही क्यों, वर्षा या सरदी की ऋतु में भी, या मैं यह कहूं कि प्रत्येक ऋतु या मौसम में हमें स्वस्थ रहना ही है। और, हम स्वस्थ रह भी सकते हैं। कुछ छोटी-छोटी ऋतु संबंधी विशेष सावधानियों के अलावा सारे वर्ष स्वस्थ जीवन शैली कैसी हो या एक महत्वपूर्ण विषय है। इस संबंध में आपके मार्गदर्शन हेतु अपनी जीवन शैली के आधार पर प्रस्तुत लेख में मैंने उन सभी व्यावहारिक मुद्दों का वर्णन किया है जिनका पालन कर हम एक ऐसी स्वस्थ जीवन शैली अपना सकते हैं कि साधारणतया हम कभी बीमार ही नहीं पड़े, हम सभी के जीवन का यह नितान्त सत्य है कि हमारे जीवन का एक मुख्य ध्येय यह है कि हमें अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त हो और यह संभव भी है। परन्तु उत्तम स्वास्थ्य जितना बाहरी कारणों पर निर्भर करता है उससे अधिक हमारे उपर रहता है। यदि हम चाहें तो अधिकांश समय हम अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त कर सकते हैं और बहुत आनंद के साथ जीवन जी सकते हैं। भगवान श्री कृष्ण ने श्रीमद्‌भगवत्‌गीता (६.५) में लिखा है ''उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्। आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मम'' अर्थात् हे अर्जुन! हमें अपना उद्धार स्वयं के सहारे ही करना चाहिए क्योंकि हमारी आत्मा ही हमारी मित्र है और आत्मा ही हमारी शत्रु भी। अर्थात् हम ही अपने मित्र या शत्रु हैं। इसलिए उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए हमें स्वयं को ही इस दिशा में कारगर कदम उठाना होगा। प्रस्तुत लेख में मैंने एक ६-सूत्रीय स्वस्थ जीवन शैली का व्यावहारिक कार्यक्रम लिखा है जिसे प्रत्येक पाठक अपने उत्तम स्वास्थ्य हेतु इसी जीवन में अपना सकता है।

१. प्रात:काल सूर्योदय से पूर्व उठना :

यदि हम उत्तम स्वास्थ्य के इच्छुक हैं तो हमें अधिक रात तक नहीं जागना चाहिए और हर दशा में प्रात:काल जल्दी उठना चाहिए अर्थात् सूर्योदय से पूर्व ही उठकर, कम से कम दो या तीन गिलास पानी पीकर, अपने नित्य कर्म के लिए तैयार होना चाहिए। इससे हम वात और पित्त के कई दोषों से बच सकते हैं और इस प्रकार से अच्छे स्वास्थ्य के लिए हम प्रथम कदम उठाते हैं। कई व्यक्ति यह पूछते हैं कि हमें कितने बजे सोना चाहिए और कितने बजे उठना चाहिए। साधारणत: हम प्रात:काल ५ बजे तक उठ जाएं और रात के १० बजे तक अवश्य ही सोने के लिए चले जाएं तो यह स्वास्थ्य के लिए बड़ा ही हितकारी है।

२. समुचित व्यापार :

नित्य कर्म से निवृत्त होने के पश्चात जहां तक संभव हो हमें कम से कम एक घंटे तक खुली हवा में अवश्य घूमना चाहिए। नई दिल्ली या बड़े-बड़े नगरों में तो हर रहवासी बस्ती में जगह-जगह पार्क बने हुए हैं जहां हम प्रात:काल घूमने जा सकते हैं। वैसे प्रत्येक शहर और नगर में घूमने के उद्यान या नदी का किनारा या अन्य स्थान है जहां हम प्रात:काल सैर के लिए जा सकते हैं। इसके साथ ही यदि हम कम से कम आधा घन्टा योगासन और प्राणायाम करें तो यह हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत अधिक लाभप्रद सिद्ध होगा।

३. शाकाहार भोजन में बुद्धिमत्ता :

यह सर्वविदित है कि विश्व के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिकों एवं डाक्टरों जैसे, नील बर्नार्ड, डॉ. डीन औरनिश, डॉ. हार्वे डाइमन्ड आदि तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अब यह सिद्ध कर दिया है कि भीषण बीमारियों जैसे, कैंसर, हृदय रोग, किडनी की बीमारी आदि को रोकने में शाकाहार अति सक्षम है। वैसे भी नैतिकता, प्राकृतिक जीवन और आध्यात्मिक दृष्टि से मानव का यदि कोई भोजन हो सकता है तो वह केवल शाकाहार है। क्योंकि जब हम किसी को प्राण दान दे नहीं सकते तो हमें किसी भी जीवन के प्राण को लेने का अधिकार नहीं है। इस बात के अलावा भी वैज्ञानिक दृष्टि से हम देखें तो संतुलित शाकाहारी भोजन में हमें पर्याप्त प्रोयीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, विटामिन और खनिज पदार्थ आदि प्राप्त हो सकते हैं, जैसा कि निम्न तालिका से स्पष्ट है :-

प्रति १०० ग्राम में प्रति मात्रा

खाद्य का नाम	प्रोटीन	खनिज लवण	कार्बोहाईड्रेट	कैलोरी
शाकाहारी खाद्य :				
मूंग	२४.०	३.६	५६.६	३३४
सोयाबीन	४३.२	४.६	२०.९	४३२
मूंगफली	३१.९	२.३	१९.३	५४९
स्प्रेटा दुग्ध पाउडर	३८.३	६.८	५१.०	३५७
मांसाहारी खाद्य :				
अन्डा	१३.३	१.९	शून्य	१७३
मछली	२२.६	०.८	शून्य	९१
बकरे का मांस	१८.५	१.३	शून्य	११४

शाकाहारी लोगों को भी संतुलिस आहार ग्रहण करना चाहिए और भोजन के मामले में कुछ नियम पालन करना चाहिए जिससे स्वास्थ्य
ठीक रहे। जैसे, जहां तक संभव हो प्रात:काल के नाश्ते में हमें केवल फलाहार ही करना चाहिए जिससे दोपहर तक प्राप्त शक्ति बनी रहती
है। जहां तक संभव हो एक समय में एक ही प्रकार के फल जैसे मीठे या खट्टे या फिर फीके फल ही लेने चाहिए। इससे उसका पाचन आसानी
से होता है। यदि किसी कारणवश प्रात:काल फलाहार संभव न हो और हमें अन्न ग्रहण करना पड़े तो दोपहर या शाम के समय फलाहार
लेना चाहिए ताकि ३ समय के मुख्य भोजन में से कम से कम एक समय का भोजन फलहाहार हो। फिर एक आवश्यक बात जो शाकाहारियों
को भी याद रखनी चाहिए कि वह है कि फलाहार के साथ किसी भी प्रकार का अन्न कभी भी हमें ग्रहण नहीं करना चाहिए, क्योंकि ज्यादातर
फल लगभग आधे घंटे में ही आमाशय में अपनी पाचन क्रिया समाप्त कर आंतों में चले जाते हैं जबकि दाल या अन्न को आमाशय की
पाचन क्रिया में लगभग ३ घंटे लगते हैं। यदि हम अन्न के साथ फलाहार करेंगे तो जिस भोजन को आधे घंटे में आंतों में चले जाना चाहिए
वह ३ घंटे या उससे अधिक आमाशय में पड़ा रहेगा जिससे गैस होने का अन्देशा बना रहेगा। यदि प्रात:काल या किसी अन्य समय अन्न
या फलाहार साथ-साथ लेने की इच्छा हो तो हम फलाहार करने के आधे घंटे के बाद अन्न ग्रहण कर सकते हैं जैसा कि अक्सर पार्टियों
या शादी विवाहों में आवश्यक हो जाता है। भोजन के समय प्रसन्नता का वातावरण रहना चाहिये। भोजन धीरे-धीरे खूब चबा-चबा कर
करना चाहिये। पेट में तीन चौथाई भाग तक ही भोजन करना चाहिए और आमाशय १/४ भाग खाली रखना चाहिए।

४. जल का सेवन :

बहुत से व्यक्ति पानी पीने की कला नहीं जानते हैं। हमें दिन भर में या कहिये २४ घंटे में ८ से १० गिलास पानी अवश्य पीना चाहिये।
भोजन के कम से कम आधे घंटे तक पानी नहीं पीना चाहिये। इसी प्रकार भोजन के कम से कम एक घंटे के बाद ही जल पीना चाहिये।
कई व्यक्ति भोजन के साथ कोला, चाय, या कॉफी लेते हैं जो कि पाचन क्रिया को बिगाड़ते हैं। इसके अतिरिक्त भी जहां तक संभव हो
हमें कोला, चाय और कॉफी पर पूर्ण नियंत्रण रखना चाहिये। वैसे तो इनका त्याग करना स्वास्थ्य के लिए सर्वोचित रहता है। अच्छे स्वास्थ्य
के लिए व्यसन-मुक्त जीवन अति आवश्यक है। इसलिए हमें किसी भी दशा में मद्यपान नहीं करना चाहिये। इसी प्रकार सिगरेट, बीड़ी,
गुटका और किसी भी रूप में तम्बाकू का सेवन नहीं करना चाहिए ताकि हम स्वस्थ रह सकें।

५. उचित आराम :

केवल शाकाहारी होने से ही हम स्वस्थ नहीं रह सकते। स्वास्थ्य के लिए आराम भी नितांत आवश्यक है। हमें अपने शरीर के अनुसार
पर्याप्त निद्रा लेनी चाहिये। औसतन ७ घंटे की नींद अधिकांश व्यक्तियों के लिए पर्याप्त रहती है। गर्मियों में और अन्य समय दोपहर के भोजन
के बाद थोड़ी देर विश्राम लेने से ताजगी प्राप्त होती है। यदि संभव हो सके तो भोजन के बाद हमें ५ मिनट 'वज्रासन' में बैठना चाहिये जिससे
पाचन क्रिया ठीक रहे। जब हम अपने व्यवसाय या व्यापार के कार्यक्रम में लगे हुए हों तो हमें यह सुख भी नहीं रहती कि दो या तीन घंटे
के बाद हम विश्राम कर लें। इसके लिए यह नितान्त आवश्यक है कि हम प्राय: २ या ३ घंटे के पश्चात थोड़ी देर उठकर ताड़ासन कर लें
या ५ से १० बार लम्बा श्वास ले लें या शवासन कर लें या अन्य किसी प्रकार से आराम कर लें। इससे थकावट कम होती है और स्वास्थ्य
अच्छा रहता है।

६. सकारात्मक विचार :

अच्छे स्वास्थ्य के लिए विचारों का बड़ा महत्व है। हमें पूर्ण प्रयत्न करके नकारात्मक विचारों जैसे, ईर्ष्या, घृणा, क्रोध, लोभ आदि
के स्थान पर सकारामक विचार जैसे, प्रसन्नता, प्रेम, सेवा एवं क्षमा आदि के विचार रखने चाहिये। यह नितान्त सत्य है कि यदि नकारात्मक
विचार हमारे मन में आयेंगे तो हम दुकी होंगे। और, यदि सकारात्मक विचार आयेंगे तो हम प्रसन्न होंगे और जिसका अनुकूल प्रभाव हमारे
जीवन पर पड़ेगा। इसलिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह नितान्त आवश्यक है कि हम मानसिक सन्तुलन बनाए रखें। दु:ख-दुख, हानि-लाभ,
यश-अपयश, निन्दा-स्तुति सभी में हमारी प्रतिक्रिया एक सी हो तो हमारा मन विचलित नहीं होगा। इसके साथ हमें यह याद रखना चाहिये
कि हमारे स्वास्थ्य का शत्रु है क्रोध। जब कोई व्यक्ति हमारी निन्दा करता है या हमें अपशब्द कहता है तो हमें क्रोध आता है। जब तक
हम उस क्रोध को भूल नहीं पाते अर्थात् उसे याद रखते हैं तो वह उसी प्रकार का होता है जैसे घाव को हरा रखना और ठीक नहीं होने
देना। ऐसे में भला आनंद की प्राप्त कैसे होगी। और, किस प्रकार हमारा स्वास्थ्य ठीक रहेगा। हमें मन की शीशी में रखता है, बजाय उस
व्यक्ति के, जिस पर क्रोध किया जाता है। इसलिए क्रोध को मिटाकर स्वस्थ जीवन की प्राप्ति का अचूक उपाय केवल एक मात्र है और
वह है क्षमा और वह भी हृदय से क्षमा। इसी प्रकार हमें नि:स्वार्थ भावना से परोपकार की भावना रखनी चाहिये जिससे हम आनंद की
तरंगे प्राप्त कर रहें। अच्छे स्वास्थ्य और आनंद के लिए एक अनुभूत नुस्खा यह है कि हमें नकारात्मक दृष्टिकोण को हटाकर अपने जीवन
के आनंद के क्षणों को याद रखना चाहिये जो हमारे जीवन में आए हैं। इसी के साथ हमें प्रात:काल कोई न कोई एक निश्चित समय पर
ईश्वर या परमात्मा या ब्रह्म से बातचीत करनी चाहिये। जिसके लिए 'ध्यान' सबसे अच्छा साधन है। अच्छे स्वास्थ्य के साथ जीना पूर्ण
रूप से तभी संभवहोगा जब हम भजन, जप, कीर्तन या ध्यान आदि के द्वारा अपने हृदय के भीतर भी झांके और रोज कुछ समय निकालकर
अपनी आत्मा के स्वरूप को पहचानने की चेष्टा करें। तब हम स्वस्थ्य जीवन जीने में सफल रहेंगे और अधिकांशत: कभी बीमार नहीं होंगे।

पर्व प्रसंग

आई रसवंती गणगौर

श्रीमती मंजूरानी गुटगुटिया, कोलकाता

राजस्थान का पारंपरिक सांस्कृतिक व्रत-त्यौहार गणगौर का संबंध शंकर-पार्वती की पूजा उपासना से है जिसको बड़े उत्साह व श्रद्धा के साथ कुंआरी लड़कियां मनवांछित वर प्राप्ति के लिये और विवाहित स्त्रियां अखण्ड सौभाग्य के लिए करती हैं। पौराणिक ग्रन्थों के अनुसार आदि देव महादेव को तीन जन्मों तक पति रूप में पाने के लिये देवी पार्वती ने कठिन तप किया था और वरदान स्वरूप अखण्ड सौभाग्यवती हुई। अत: देवी पार्वती सुख सौभाग्य प्रदायिनी, सर्व-शक्तिमान कहलाई। ग्रन्थों के अनुसार भगवान शंकर ने इस तिथि पर गौरी को अखण्ड सौभाग्य प्रदान किया था। इस प्रकार भगवान शंकर और पार्वती दोनों की ही पूजा-अर्चना की गयी है। हिन्दू तीज-त्यौहार प्राय: आपस में संबंधित हैं, एक त्यौहार समाप्त होते होते दूसरे का आरंभ हो जाता है। गणगौर का संबंध होली से है। कथन है होलिका दहन में जब प्रह्लाद को गोद में लेकर अग्नि में बैठी उसकी बुआ भस्म हो गयी उसको बचाने का बहुत प्रयत्न किया गया किन्तु असफलता मिली। कुंआरी बालिकाओं को जिन्होंने होली की राख से पिण्डी बनाकर उसकी पूजा आरंभ कर दी थी, सातवें दिन लगा कि उन पिण्डियों में स्पन्दन होने लगा तथा उनके घरों में धन-धान्य की वृद्धि होने लगी। अगले सप्ताह बालिकाओं को स्वप्न आया कि काष्ठ प्रतिमा बनाकर सजा संवार कर पूजा करने से यह गौरी के रूप में जीवित हो उठेंगी। इस प्रकार गण गौरी की पूजा का विधान चल पड़ा। कुछ घरों में होली के बाद शीतला अष्टमी के दिन कुम्हार के घर से मिट्टी लाकर गणगौर, ईसर कान्हा और राधा की मूर्तियां बनाई जाती हैं, उन्हें सजा संवारकर लड़कियां गीतों के साथ पूजा करती हैं, भोग लगाती हैं। इस प्रकार पूजा पन्द्रह दिनों तक चलती है। सुहागन स्त्रियां बसन्ती नवरात्र की तृतीया को पूजा करती हैं- उसके बाद उद्यापन अथवा विसर्जन कर दिया जाता है। पूजा में काजल, मेंहदी, रोली आदि की सोलह-सोलह टिकी दी जाती है। सोलह पकवान आदि चढ़ाये जाते हैं, गीत गाये जाते हैं। सुहागन स्त्रियां सम्पूर्ण श्रृंगार करती है। सुन्दर वस्त्राभूषण धारण करती है। मेंहदी रचाती हैं- पूजा के बाद उनके पीहर से साथिया थाली में आये पकवान वस्त्र आदि को संकल्प कर परिवार की बड़ी स्त्री को दे देती है और उनसे अखण्ड सौभाग्य का आशीर्वाद पाती हैं।

राजस्थान जहां अपने रणबांकुरों की शौर्य गाथाओं के लिये प्रसिद्ध है, वहां तीज-त्यौहारों के लिये उनकी सौन्दर्य श्रृंगारमयी समर्पित माधुर्य भावना उल्लेखनीय है। होली की ढ़प की गूंज और गीतों की लय धीमी नहीं हो पाती कि चैती हवा के झोंकों के साथ गणगौर के बहु प्रतीक्षित त्यौहार का स्वागत हृदयग्राही गणगौर के सुमधुर गीतों से होता है। जैसे जड़ चेतन में चैतन्यता का संचार हो उठता है। छोटी-छोटी ढाड़ियां गांव कस्बे नगरों की गलियों में लोग उत्साह उमंग से सराबोर आनन्द विभोर हो उठते हैं। गणगौर पूजन के बाद दो दिनों तक गणगौर की शोभा यात्रा का उत्सव मनाया जाता है। उदयपुर और बूंदी सवारियां (गणगौर) की सजावट और रख-रखाव के लिए प्रसिद्ध है। किन्तु एक दुर्घटना के बाद बूंदी (कोटा) में गणगौर की सवारी नहीं निकाली जाती।

गणगौर का राजस्थान में वही महत्व है जो बंगाल में दुर्गापूजा अथवा महाराष्ट्र में गणपति पूजा का। गणगौर की शोभा यात्रा जो जयपुर में आज भी सामन्ती अथवा राजकीय स्तर पर त्रिपोलिया गेट से निकाली जाती है। इस अभिन्न शोभा यात्रा में आगे-आगे कलात्मक मखमली जारदोजी के झूल ओढ़े हाथी पीछे पीछे शालीन घोड़े और पालकियां पैदल रणबांकुरे अपनी राजपूती शान-शौकत के साथ होते हैं। साथ में मखमली झण्डे बैनर, स्टाफ सदस्य उनके ओहदे के अनुसार अलग अलग चमचमाती वेशभूषा साफा चूड़ीदार पैजामा अचकन जिनके पैरों में सोना और कमर में तलवार होती है। एक समय विभिन्न राज्य की सवारियों में आपस में होड़ लगती थी। कहते हैं कि शक्तिशाली राजा गणगौर का हरण कर लेता था और यह बहुत बहादुरी का काम समझा जाता था। उस समय करोड़ों रुपये के नखशिख आभूषणों से गणगौर सुसज्जित होती थी। आज समय बदल गया है- वह सामन्ती युग नहीं रहा तथापि परम्परा का निर्वाह हो रहा है और आज भी लाखों लोग जयपुर में इकट्ठे होते हैं- छज्जे परकोटे भर जाते हैं। कहीं तिल रखने की जगह नहीं होती है। दूर दूर के सैलानी आते हैं। चारों तरफ आनन्दमय, उल्लसित वातावरण में राजस्थानी वाद्ययंत्रों तथा गीत-म्हारी घूमर छय नखरालो ए मां... आदि गीतों की सुरीली धुनों में लोगों का मन झूम झूम उठता है।

धर्म क्या है?

धर्म क्या है?
मंदिरों में,
देवता की मूर्ति आगे,
फूल अंजलि भर चढ़ाना?
या इबादत में खुदा की
मस्जिदें में सिर झुकाना?
या कि फिर गिरजाघरों में,
झूलते 'ईस' के आगे,
प्रार्थना में,
मोम के दीपक जलाना?
या तड़पते भूख से जो
घूमते नंगे सड़क पर,
हाथ में लेकर कटोरे,
भूख है उनकी मिटाना?
या कि लेकर जो हथौड़े,
चिलचिलाती धूप में भी,
तोड़ते गिट्टी सड़क पर,
पेट भर उनको खिलाना?
या कि खेतों में जाकर,
नित बहाते स्वेद अपना,
फावड़े हँस कर चलाते,
धर्म है उनको जिलाना?

-युगल किशोर चौधरी
(चनपटिया, बिहार)

नेतावां री जात

इण गेली गेली बात्यां मोय कोई धरियो
वात्यां थोथी माथै मांय पूरो गोबर भरियौ
तू तो बनाई थारी साथी साथी जान नेता
म्हां तो पैली इज समझग्या हो बुत्ता देखन
चुणाव जीत्यां पछै पैळीकर कीकर आरू
म्हानै बतावो सरकारी हुक्म कांई लाख
मंगतां कलाई वोट मांगतै सरम नीं आवै
म्हां लोक भी थांनै जीताय कोई सुख पायो
चार जण खड़ैस आ वणां था हा भला
वणस्यूं दीधा वोट बुलाई हां मूंडी बला
अबै आय पधारौ अठैस्यूं वापस आया ना
अबै इजे ने मौको देखर देखस्या हो।

-गुलाबचन्द कोटड़िया, चेन्नइ

अच्छे गृहस्थ का सार

झूठ से परहेज करें।
खर्चा सीमित रखें।
सादगी अपनाएं।
एक-दूसरे की इज्जत करें।
निन्दा से बचें।
दूसरे को बहकावे में न आएं
चीजें रखने का स्थान बनाएं।
दिखावा बिल्कुल न करें।
सुनें सबकी करें मन की।
कम चीजें रखें, हल्के रहें।
ईश्वर का धन्यवाद करें।
बच्चों को सबल बनायें, खरा खोटा
समझाएं।
घर को अयोध्या बनाएं, लंका नहीं।
मौसम के फल-सब्जी ही खाएं।
बड़ों की सेवा, बच्चों से प्यार करें।
बुढ़ापे के लिए कुछ बचाएं।
ऊंची आवाज में मत बोलें।
हक के साथ फर्ज को पहचानें।
चेहरे पर मुस्कान रखें।
बोलने से सुनना ज्यादा अच्छा है।
मां-बाप की आदतें बच्चों में भी आती है।
बढ़ा चढ़ाकर बात न करें।
निरोग रहना सीखें।
आज को सुखी बनाओ, कल आपके हाथ
में नहीं है
कर्मशील बनें।

-चौ. संजय अग्रवाल

दहेज

निर्दोष महिलाएं क्या जलती रहेगी?
दहेज रूपी दानव से क्या डरती रहेगी?
अहिंसा की भूमि पर हिंसा है कैसी?
सत्य पर असत्य की सत्ता है कैसी?
अपने बचो, प्राणी-मात्र को बचाओ
निर्दोष महिलाओं को कभी न सताओ।
'पारस' की विनती सुनो मेरे भाई।
अहिंसा की भूमि पर, क्यों हिंसा है छाई?

-परशुराम तोदी, 'पारस'

शाबाश कुम्बले

टेस्ट क्रिकेट में ५०० विकेट का मुकाम पाया
तभी तो कुम्बले का कारनामा अमर उजाला/दैनिक जागरण के मुख्य पृष्ठ पर छाया।
ईश्वर तेरी गजब गाथा, कहीं धूप तो कहीं छाया (भज्जी)
कैक व शैम्पेन के साथ, साथी खिलाड़ियों ने जश्न मनाया,
हर क्रिकेट प्रेमी का मन हर्षाया।
कुम्बले का शानदार ३०वां ओवर साबित हुआ गोल्ड
हैट्रिक तो बन ना पायी, पर कुम्बले ने किये ३ विकेट बोल्ड
१०० करोड़ भारतीयों की शुभकामनायें, प्रेषित तुम्हें हर सुबह और शाम।
टेस्ट विकेटों के शिखर पर हो, इसी वर्ष कुम्बले का नाम।

-डा. प्रमोद अग्रवाल,
नैनीताल

याद करो प्रभु
जब तुमने पीठ पर
धरती उठाई थी-
सबका बोझ
अपने पर लेने की ताकत
कहां पाई थी।

-धर्मवीर भारती

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

युग पथ चरण

कोलकाता : मारवाड़ी फिल्म का प्रसारण

राजस्थान स्थानपना दिवस के महान अवसर पर राजस्थान फाउंडेशन कोलकाता एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के संयुक्त तत्वावधान में एक सुप्रसिद्ध मारवाड़ी फिल्म ''बाई चाली सासरिये'' का प्रसारण २५ मार्च २००६ को आईनक्स सिटी सेंटर एवं आईनक्स फोरम में किया गया। फिल्म सभी दर्शक वर्ग द्वारा भरपूर सराही गई।

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

कोलकाता : होली प्रीति सम्मेलन आयोजित

१५ मार्च। कोलकाता मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा होली प्रीति सम्मेलन विशुद्धानंद विद्यालय के सभागार में पारम्परिक रूप से मनाया जिसमें कलकत्ता के कई सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता मौजूद थे। संस्था के अध्यक्ष ओम प्रकाश पोद्दार ने लोगों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि रवि पोद्दार ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आज के समय में आये बदलाव से उत्पन्न जटिलताएं और सामाजिक दिखावे पर प्रहार किया। दहेज प्रथा की निंदा की तो शादी में खर्च होने वाले धन को दिखावे का नाम दिया, संयुक्त परिवार को पारंपरिकता और संस्कार से जोड़ने वाली संस्था के रूप में परिभाषित किया। उन्होंने कहा कि यदि हमारे पास पैसा अधिक हो जाए जिसका प्रयोग हम दिखावे और शौक के लिए खर्च करने लगे तो जरूरी है वैसे लोगों को समझाया जाए। उनके पैसों का दस प्रतिशत अपने परिवार के किसी जरूरत मंद को दें ताकि लोगों को मदद हो सके। उन्होंने लोगों से चेकबुक चैरिटी न करने का भी अनुरोध किया। संस्था के कार्यों के लिए चैकबुक के जरिए धन देने से काम नहीं चलेगा। आप स्वयं उस संस्था में जाएं अपने बच्चों को भी दिखाएं ताकि वे भी जाने संस्था क्या होती है। इस अवसर पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष सर्वश्री मोहनलाल तुलस्यान उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा, महामंत्री भानीराम सुरेका, संयुक्त महामंत्री राम औतार पोद्दार सहित शाखा सम्मेलन के चेयरमैन अनिल शर्मा, कार्यकारी अध्यक्ष सांवरमल अग्रवाल, मंत्री राजाराम शर्मा आदि भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के अन्त में संस्था के संरक्षक सांवरमल भीमसरिया ने धन्यवाद करते हुए सबों का आभार व्यक्त किया।

होली प्रीति सम्मेलन में प्रधान अतिथि श्री रवि पोद्दार, अध्यक्षीय भाषण देते हुए।

होली प्रीति सम्मेलन में कोलकाता के सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं प्रबुद्ध नागरिक वृन्द।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

पटना : प्रादेशिक समिति की बैठक आयोजित

प्रादेशिक समिति एवं प्रमंडल की एक बैठक दिनांक २६ मार्च २००६ को आयोजित की गई जिसमें संगठन, सदस्यता एवं स्थानीय समस्या आदि महत्वपूर्ण विषयों पर गहन चर्चा की गई। यह जानकारी प्रादेशिक अध्यक्ष श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला ने दी।

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

राहा : होली प्रीति सम्मेलन सम्पन्न

१५ मार्च २००६। पूर्वोत्तर प्रादेशिक प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन की राहा शाखा द्वारा होली के शुभ अवसर पर शाखाध्यक्ष श्री मांगीलाल चौधरी की अध्यक्षता में एक प्रीति सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें युवक युवतियों द्वारा नृत्य, गान, चुटकुला आदि मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए एवं तदुपरान्त पुरस्कार वितरण भी किए गए। प्रथम पुरस्कार मनोज आये, द्वितीय पुरस्कार पुष्पी खेतान एवं तृतीय पुरस्कार हर्ष जैन को दिया गया। पांच सांत्वना पुरस्कार भी दिए गए। सम्मेलन के मुख्य संचालक श्री भगवान दास जी खेमका ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में महिलाएं एवं बच्चे उपस्थित थे।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच

कांटाबाजी : श्री मुकेश जैन शाखाध्यक्ष निर्वाचित

मारवाड़ी युवा मंच, कांटाबाजी शाखा का सत्र २००६-०७ हेतु अध्यक्ष का चुनाव हुआ जिसमें शाखा मंत्री श्री मुकेश जैन (गणपति ज्वेलर्स) सर्वसम्मति से शाखाध्यक्ष निर्वाचित हुए। चुनाव अधिकारी श्री अनन्द अग्रवाल की देखरेख में चुनाव सम्पन्न हुआ। नवनिर्वाचित शाखाध्यक्ष श्री जैन ने सदस्यों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन करते हुए उनसे सहयोग की अपेक्षा की एकवं मंच दर्शन के तहत कार्य करने का आश्वासन दिया। उन्होंने शीघ्र ही कार्यकारिणी के गठन की घोषणा की। इस अवसर पर श्री जैन को राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारियों सहित मंच की मिड याउन महिला शाखा तथा विभिन्न सामाजिक संस्थाओं द्वारा बधाई दी गयी।

मुजफ्फरपुर : प्रान्तीय सचिव चौधरी संजय अग्रवाल सम्मानित

२६ जनवरी। गणतंत्र दिवस के अवसर पर मोतीपुर प्रखण्ड मुख्यालय में आयोजित समारोह में मंच के प्रान्तीय एवं पर्यावरण पर जागरूकता अभियान चलाने वाले सामाजिक कार्यकर्ता चौधरी संजय अग्रवाल को प्रखण्ड प्रमुख एवं प्रखण्ड के अधिकारियों ने प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

श्री चौधरी ने प्रखण्ड विकास पदाधिकारी से मिलकर विकलांक का सर्वे कराने का अनुरोध किया है ताकि उन्हें निःशुल्क कृत्रिम पैर प्रत्यारोपण योजना का लाभ दिलाया जा सके। अधिकारी ने उन्हें विकलांगता शिविर लगाने का आश्वासन दिया। गणतंत्र दिवस के अवसर पर मोतीपुर शाखा की ओर से सायंकाल कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। अध्यक्षता एवं संचालन चौधरी संजय अग्रवाल ने किया।

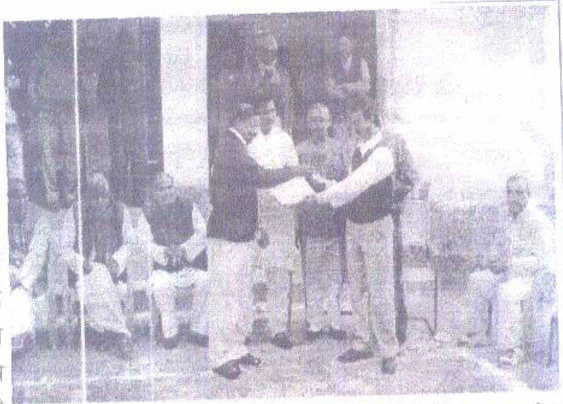

प्रांतीय संयुक्त मंत्री चौधरी संजय अग्रवाल का मोतीपुर का गौरव सम्मान करते हुए।

सम्मान-बधाई

...विभूतियों का सम्मान किया गया

...उंडेशन द्वारा बंग सेवा सम्मान २००६ का आयोजन किया गया। ...द्ध स्वतंत्रता सेनानी व शिक्षाविद प्रताप चंद्र चन्दर को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से ... अन्य प्राप्तकर्ताओं में सौमित्र चटर्जी, फुटबालर चुनी गोस्वामी, साहित्यकार बुद्धदेव गुहा ... हर्ष वर्द्धन नेवटिया, सन्मार्ग के निदेशक विवेक गुप्ता, नयनतारा पाल चौधरी, रवि पोद्दार, ...नार, रूपक बरूआ, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा, ...नम्रमता प्रदर्शित करते हुए कहा कि वे नहीं जानते कि वे इस पुरस्कार के हकदार हैं या नहीं ...तरने की। बहन ब्रह्मकुमारी मधु ने इसे अपने संस्थान का सम्मान कहा जबकि फादर मैथ्यू ...र शहरी का पुरस्कार कहा। कार्यक्रम का संचालन सतीनाथ मुखर्जी ने किया जबकि स्वागत ...राजू खंडेलवाल ने किया।

चार...
वणस्यू...
अबै आय...
अबै इजे ने मौ...
-गुला...

...ता एवं स्थानीय
...नझुनवाला ने की।

Wonder Images Pvt. Ltd.

we print on

FLEX

SAV

MESH

ONE-WAY VISION

FLOOR ETCHING

UK MEDIA

LAMINATION

CANVAS

Etc.

Contact :-

22155479

22155480

9830045754

9830051410

9830425990

9830768372

9830590130

9331854244

9231699624

154, LENIN SARANI,
KOLKATA-13
2nd Floor

REGISTERED Postal Registration
No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2004-06
Date of Publication- 27 MARCH 2006
RNI Regd. No. 2868/68

MACO gel

Makesworth Industries Ltd.

'KAMALALAYA CENTRE'
Suite 504, 5th Floor
156A, Lenin Sarani, Kolkata-700 013

MACO GEL is a high profile product of **Makesworth Industries Ltd. (MIL),** a part of the Makesworth group that excels in distribution of Industrial oils, rubber hoses, plastics and allied products in eastern India.

MACO GEL in its various grades is formulated by employing the most modern technology. This ensures total compatibility with cable polymers and coatings. It has excellent water blocking property as well as processibility for case and minimising down time during cable production.

The **MIL** plant located on the outskirts of Kolkata on Diamond Harbour Road, has state of the art technology and R & D facilities.

MACO GEL—THE PRODUCT

Category : Cable filling compounds. Soft pasty, hydrophyllic gel formulated from high quality base oil and other hi-tech ingredients which provide superior water blocking capacity over a wide temperature range.

Application : The ideal water resistant material for filling the interstices in Multipair Polyethylene insulated and sheathed telephone cables, ingress of moisture into cable sheath damage occurs.

Features : A homogeneous compound and containing a suitable antioxidant. Easy removal by wiping from insulated conductors.

Transparent, so does not obscure the colour identification of the polyethylene insulation.

Fully compatible with polyethylene of medium and high density.

No unpleasant odour. No toxic or dermatic hazards.

Stable without migration.

FILL LONG LIFE INTO YOUR CABLE

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700007
Phone : 2268-0319

To,